इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित का पत्र

(THE EPISTLE OF PAUL THE APOSTLE TO THE EPHESIANS)

इफिसियों (Ephesians)

१ **यीशु** मसीह के पवित्र और विश्वसनीय लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं, जिनके लिए स्वर्गिक पिता की इच्छा
२ से पौलुस, यीशु मसीह का प्रेरित है । **हमारे** स्वामी यीशु मसीह और स्वर्गिक पिता की ओर से तुम्हें शर्तहीन
३ कृपा और शान्ति मिलती रहे । **हमारे** यीशु मसीह के पिता और स्वर्गिक पिता की प्रशंसा हो, जिन्होंने हमें
४ स्वर्गिक स्थानों में सारी आत्मिक आशीषों से भर दिया है । **जिस** तरह से उन्होंने संसार की नींव डाले जाने
से पहले हमें अपने में चुन लिया था, ताकि हम उनके सामने पवित्र और बिना किसी दोष के ठहराए जाएँ ।
५ **अपनी** इच्छा के भले उद्देश्य के अनुसार पहले ही से उन्होंने प्रेम में यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने गोद
६ लिए हुए बच्चों की तरह ठहराया है। **उनकी** असीम कृपा और महिमा की बढ़ाई के लिए जिसके द्वारा उन्होंने

१:१ ***"प्रेरित"*** -रोमियों १:१;१ कुरि.; गलाति.१:१ ।

"पवित्र" -रोमियों १:७

"इफिसुस" - प्रेरित १८:१६;१६:१-४१ ।

"विश्वसनीय" -वे लोग जो मसीह में विश्वास से जीवन बिता रहे थे ।

"मसीह के" - इस चिट्ठी में यह शब्द बार-बार आए हैं - पद ३,४,७,१२,१३;२:६,७,१०,१३;३:६,११,२१, ४:३२; ६:१० । यह मसीह के साथ हमारी एकता को दिखाती है । यूहन्ना १७:२०-२३; रोमि ६:३-८ । विश्वासियों की हर एक आत्मिक आशीष उसके "मसीह में होने" की वजह से है । यीशु के बगैर, उनके पास कुछ नहीं है और वे कुछ नहीं हैं ।

१:२ रोमि १:७ ।

१:३ ***"यीशु मसीह के पिता और स्वर्गिक पिता"*** -इस पृथ्वी पर मनुष्य बनने से यीशु ने परमेश्वर को पिता कहा- मत्ती २७:४६; यूहन्ना २०:१७ । ऐसा करने से वह यह नहीं कह रहे थे कि वे खुद परमेश्वर नहीं हैं । तुलना कीजिए यूहन्ना ८:२४,५८; २०:२८,२६; मत्ती ११:२७, फिलि २:६; लूका २:११ भी देखें ।

"भर दिया" - यहाँ क्रिया बीते समय की है । स्वर्गिक पिता ने विश्वासियों को सभी संभव आत्मिक बरकतें दी हैं । ये सभी मसीह में मिलती हैं । विश्वासी मसीह में हैं, जहाँ आशीषे हैं । उत्पत्ति १२:१-३, गिनती ६:२२-२७; व्यवस्था २८:३-१४; भजन १:१; ११६:१; मत्ती ५:३-१२; प्रेरित ३:२६; गल ३:६,१४ का मतलब है सभी मसीही, कुछ एक नहीं ।

"स्वर्गिक स्थानों" - यह भी एक खास बात है जो इफिसी के खत में मिलती है । १:२०;२:६;३:१०; ६:१२। यूनानी में यह बहुवचन "स्वर्गिक स्थानों" है । यह स्वर्ग में परमेश्वर के रहने के स्थान से बढ़कर है (६:१२) । ऐसा लगता है, यह अनदेखी आत्माओं की दुनिया जहाँ परमेश्वर का शासन है, वह तो है ही, साथ ही जहाँ शैतान परमेश्वर के शासन का विरोध करता है ।

परमेश्वर सबसे ऊँचे पर हैं । शैतान और बुरी आत्माएँ आत्मिक आसमान के सबसे निचले भाग में विश्वासियों से संघर्ष करती हैं । परमेश्वर की निगाह में विश्वासी आसमानी दायरे के सबसे ऊपरी भाग में हैं (२:६) क्योंकि उनके प्रधान और उनके प्रतिनिधित्व करनेवाले वहीं हैं (१:२२) और वे उनमें (यीशु में हैं) । हालाँकि वे इस पृथ्वी पर अनदेखे आत्माओं के दायरे में दुष्ट व्यक्तियों से युद्ध कर रहे हैं ।

"सारी आत्मिक आशीषों" -यह आत्मिक दायरे की बरकतें हैं । यह परमेश्वर की बड़ी कृपा जिससे हम बचते हैं, हमें आत्मिक बनाती है और मसीह के लिए जीने में मदद करती है । हमेशा के लिए उनके साथ रहने के लिए यह हमें स्वर्ग तक पहुँचाती है । पौलुस यह नहीं कहता है कि स्वर्गिक पिता हमको शारीरिक, भौतिक और मानसिक तरीके से आशीषित नहीं करते है । लेकिन यहाँ उसका ज़ोर इन बातों पर नहीं है । पौलुस इनमें से कुछ आत्मिक आशीषों का वर्णन करता है - पद ५,७,१३,१४,१७-१६; २:५,६,१०,१३-१६, २२; ३:१६, १७:२०; ४:७,१३,२४; ५:८,१८,२५-२७; ६:१०,१३ ।

१:४-६ ***"चुन लिया"*** -मरकुस १३:२०; यूहन्ना १५:१६,१६; रोमि ८:३३;२ थिस्सु २:१३; १पत २:६ । यूहन्ना ६:३७; १७:६ से मिलान करें। इसके पहले विश्वासी पैदा हुए, दुनिया बनायी गयी, यहोवा परमेश्वर ने भविष्य के समय को देख हम सबको मसीह में देखा और ऊँचे स्थान के लिए ठहराया । देखें रोमि ८:२६,३० और वहाँ के और रोमियों के आखिरी भाग के नोट्स को । यहाँ ४-६ में पौलुस परमेश्वर के चुनाव और विश्वासियों के पहले से ठहराए जाने के बारे में सिखाता है ।

पहली बात - परमेश्वर चाहते थे कि हम पवित्र और निर्दोष ठहराए जाएँ" -पद ४; ५:२२-२७, यूहन्ना १७:१७-१६, फिलि २:१५, तीतुस २:१४ । 'प्रेम में' आगे या पीछे जोड़ा जा सकता है ।

दूसरी बात- परमेश्वर चाहते थे कि हम उनके बच्चे ठहरें (पद ६) । यूहन्ना १:१२,१३;रोमि ८:१५; २ कुरि ६:१७,१८, यूहन्ना ३:१,२ । "गोद लेना" गोद लिए जाने के बारे में रोमि ८:२३ और नोट्स देखिए । आत्मिक जन्म की वजह से विश्वासी स्वर्गिक पिता की सन्तान बन चुके हैं । (यूहन्ना ३:३-८) उनके जी उठने के समय वे गोद लिए जाएँगे । मतलब यह कि इस तरह से खुले रूप में हमारे गोद लिए जाने का ऐलान किया ।

तीसरी बात - परमेश्वर यह चाहते थे उनकी बड़ी दया के लिए बड़ाई करें । २:८,६; । १कुरि १:२६-३१; गल ६:१४ । यदि लोग खुद को बचा सकते थे, तो सारी बड़ाई उन्हीं को मिलती । ऐसे किसी भी घमण्ड की संभावना को स्वर्गिक पिता ने खत्म कर डाला।

७ हमें अपने प्रिय में स्वीकार किया है। **उन्हीं** में हमें उनके रक्त से आज़ादी यानि अपराधों की क्षमा, उस
८ कृपा के खज़ाने के कारण है, **जिससे** उन्होंने सारे ज्ञान और समझ के साथ हमारे ऊपर उण्डेल दिया है ।
६ **जिस** भले लक्ष्य की कामना स्वर्गिक पिता ने पहले से कर रखी थी, उसके अनुसार उन्होंने हम पर अपनी
१० इच्छा के रहस्य को प्रगट किया । **ऐसा** इसलिए है, कि वह स्वर्ग और पृथ्वी की सब बातों को समयों के पूरा
११ हो जाने तक मसीह में सब कुछ इकट्ठा करें । **साथ** ही साथ यीशु मसीह की वज़ह से हमने स्वर्गिक पिता से
१२ मीरास पायी है, क्योंकि उन्होंने हमें पहले ही से चुन लिया और सभी कुछ उनकी इच्छा से होता है । **ताकि**
१३ जिन्होंने पहले से मसीह में भरोसा किया हम उनकी महिमा की स्तुति हों । **जब** तुमने सत्य का वचन (मुक्ति

परमेश्वर की महिमा से भरी हुयी कृपा ही लोगों को मुक्ति देती है । इसलिए सारा सम्मान उन्हीं के लिए है । कृपा को कमाया नहीं जा सकता इसलिए सारा आदर उन्हीं के लिए है (रोमि ४:४,५; ६:२३; ११:५,६) । असीम कृपा पर कुछ और नोट्स देखे जा सकते हैं वे हैं - यूहन्ना १:१४,१६; रोमि १:७ । प्रेम शब्द देखें जो ४ पद के आखिर में है । यह परमेश्वर की सृष्टि से पहले के चुनाव के बारे और ठहराए जाने के बारे में है-२:४; यर्मि ३१:३; रोमि ५:८;८:३६; यूहन्ना ३:१,१६; ४:८ ।

"पहले से ही ठहराया"-८:२६ के नोट्स को देखें और पूर्वज्ञान के बारे में जो रोमियों के आखिर में हैं ।

"हमें स्वीकार किया" -यह एक अजीब सच्चाई है बहुत से विद्वान कहते हैं कि यहाँ यूनानी शब्द का मतलब है "मुफ्त में दिया" ।

"प्रिय"-(पद ६) मसीह है - मत्ती ३:१७; यूहन्ना १७:२७, विश्वासी "मसीह में" हैं इसलिए पूरी तरह से उनके प्यार और कृपा के पास भी ।

१:७ ***"आज़ादी"***-लूका २:३८; रोमि ३:२४, १ कुरि १:३०; गल.३:१३; कुलु १:१४; इब्रा ६:१२,१५ । भजन ७८:३५, मत्ती २०:२८ के नोट्स। छुड़ाये जाने में गुनाहों की माफी भी है, क्योंकि दुष्टता ने हमें बान्ध रखा था । मसीह ने हमें अपना रक्त दिया और अपनी ज़िन्दगी को हमारे लिए उण्डेल दिया ।

"क्षमा" - ४:३२; मत्ती ६:१२; ६:६; १२:३१; मरकुस २:७ लूका २४:४७; प्रेरित १३:३८; २६:१८; रोमि ४:७; कुलु २:१३; १ यूहन्ना १:६ । अपराधों की क्षमा अच्छे बर्ताव से नहीं पायी जा सकती । यह मसीह में विश्वासियों के लिए मुफ्त है ।

"कृपा का खज़ाना" क्या है-तुलना करें २:४,७; रोमि २:४; १०:१२ । इस दुनिया में यही सच्ची दौलत है जो विश्वासियों को सचमुच में धनी बनाती है । -पद ३; २कु ८:६,१ कुरि ३:२१-२३ ।

१:८ शब्द **"उण्डेल"** पर ध्यान दें । यहोवा परमेश्वर भलाई करने में न ही कंजूस हैं और न ही हिचकिचाते हैं । यह भी कि हम उन पर ज़ोर डालें कि वह हमें आशीष दें । हमें स्वर्ग में किसी संत की भी ज़रूरत नहीं कि वह हमारे लिए बिनती करें कि हम आशीषें प्राप्त करें । परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा था ताकि वह मर जाए और हम सब उनकी मदद पा सकें । रोमि ८:३२ से मिलान करें । जिस तरह से वह अपने अस्तित्व को खो नहीं सकते, भलाई करना रोक नहीं सकते, हमेशा तक वह अपनी बड़ी कृपा के धन को उण्डेलते रहेंगे -२:७। मन में आज़ादी, क्षमा, दूसरी सभी भलाईयाँ परमेश्वर हमें "सारे ज्ञान और समझ" से देते हैं, शायद इसका मतलब यह होगा कि हमारे साथ उनका रवैया बुद्धिमानी का था । यह सच है । लेकिन शायद इसका मतलब यह है कि मसीह में स्वर्गिक पिता ने विश्वासियों के लिए पूरे आत्मिक ज्ञान और परख को रखा है । तुलना कीजिए कुलु १:६, २:२,३; १ कुरि २:७-१० ।

१:६,१० ***"रहस्य"***-३:३,४:६;५:३२; ६:१६,मत्ती १३:११ पर नोट्स देखें । रोमि १६:२५,२६ । जिस रहस्य को परमेश्वर ने दिखाया और जिसके बारे में पौलुस यहाँ बताता है, वह यह है; भविष्य में जब समय आएगा, यहोवा परमेश्वर एक नयी व्यवस्था की शुरूआत करेंगे और यीशु को सर्वप्रमुख रखेंगे । तुलना करें रोमि ८:२१; मत्ती १६:२८; १कुरि १५:२५; फिलि २:६-११; प्रका २०:४-६ ।

१:११,१२ ***"मीरास पायी है"*** -यह भी बीते हुए दिन की बात है । हमने इसे हासिल किया है, लेकिन पूरी तरह से हम इसमें दाखिल नहीं हुए हैं । पद १४; १ पत १:४ ।

"पहले से ही चुन लिया" - पद ५ ।

"इच्छा"- कभी-कभी इस दुनिया में ऐसा लगता है कि घटनाएँ उल्टे-पुल्टे रूप में होती हैं । बहुत सी घटनाओं में कुछ कारण नहीं दिखता है । ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी बुद्धि सीमित है । परमेश्वर के पास एक सिद्ध योजना है और उसे वह पूरा कर रहे हैं, तुलना करें रोमि ८:२८; ११:३३-३६; यशा ४६:१० । परमेश्वरीय योजना खासकर विश्वासियों के उस भविष्य से सम्बन्धित है, जिसकी योजना उन्होंने रखी है । और वह योजना है "उसकी महिमा की स्तुति"- पद १४;२१; रोमि १६:२७ गल १:५; फिलि १:११; इब्रा १३:२१; १पत २:६; प्रका १ कुरि. १०:३१ ।

१:१३ ***"तुमने"***-यहाँ वह गैरयहूदियों की तरफ इशारा कर रहा है । पद १२ में वह उनके विषय कहता है जो पहले मसीह में आशा रखने वाले थे । यानि कि यहूदी विश्वासी । परमेश्वर के साथ जो पहली व्यवस्था थी, उसमें केवल यहूदियों को लाभ थे जो गैर यहूदियों को नहीं थे । अब गैर यहूदी विश्वासियों को भी मसीह में आशीष मिली है । इस चिट्ठी का यह एक खास विषय है - २:११-२२;३:६। यीशु मसीह का शुभसंदेश "सत्य का वचन" कहलाता है । कुलु १:५; २ तिमो २:१५, याकूब १:१८ । इसे, सच के परमेश्वर ने प्रगट

१४ का शुभसंदेश) सुना तब विश्वास करके प्रतिज्ञा की आत्मा की मोहर प्राप्त की, **परमेश्वर** अपने वायदे के अनुसार
हमें हर चीज देंगे और यह कि उन्होंने हमें अपने लोग होने के लिए खरीद लिया है, पवित्र आत्मा इसकी गारण्टी
१५ है । यह एक और कारण है कि हम महिमा में परमेश्वर की बढ़ाई करें । **इसलिए** मसीह पर तुम्हारे विश्वास
१६ और पवित्र लोगों के लिए तुम्हारा प्यार है, **उसे** सुनकर मैं भी तुम्हारे लिए धन्यवाद के साथ प्रार्थना करने से
१७ नहीं रूकता । **ताकि** यह कि हमारे प्रभु यीशु के परमेश्वर, महिमा के पिता तुम्हें आत्मिक ज्ञान और प्रकाश और
१८ परमेश्वर के ज्ञान में तुम्हें बुद्धि और ज्योति दें । **मैं** प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारी समझ की आँखें खुल जाएँ
ताकि तुम जानो कि उनके बुलाए जाने की आशा और पवित्र लोगों में उनकी महिमामय मीरास की दौलत क्या
१९ है । **हम** विश्वास करनेवालों के लिए उनकी अपार शक्ति की बढ़ती जानेवाली महानता क्या है । यह उनके

किया था । यह शुरू से आखिर तक सही भी है -यूहन्ना १७:१७; १२:४६,५०; ८:४०; ७:१६,१७ । यह "मुक्ति" का संदेश है। रोमि १:१६ के नोट्स देखें । इफिसी के विश्वासियों ने सिर्फ सत्य वचन को सुना ही नहीं परंतु विश्वास भी किया । मत्ती १३:१४,१५। भरोसा करने से पवित्र आत्मा की मोहर लग जाती है ।

"मोहर" - पवित्र आत्मा स्वयं मोहर है ४:३० । मोहर मालिकपन को दिखाती है - पद १४; २तिमो २:१९; रोमि ८:९ स्वर्गिक पिता पवित्रआत्मा उन को देते हैं, जो उनके हैं । पवित्रत्मा को हासिल किया जाना ही उन्हें परमेश्वर का होने को दिखाता है । और कोई बात यह नहीं दिखा सकती है । जब पहले व्यक्ति यीशु पर भरोसा रखता है, परमेश्वर का आत्मा उसमें निवास करने आ जाता है - गल ३:२, ५,१४; ५:१८ मत्ती ३:१६,१७; २८:१९; यूहन्ना १४:१६,१७ और प्रेरित १:४ में नोट्स देखें ।

"प्रतिज्ञा की"-लूका २४:४८; प्रेरित १:४,,५ ।

१:१४ स्वर्गिक पिता भरोसा करनेवालों को पवित्र आत्मा "बयाने" जमा धनराशि" गारण्टी की शक्ल में देते हैं । २ कुरि ५:५ से तुलना करें ।इसका मतलब यह हुआ कि जो काम उन्होंने शुरू किया है, उसे पूरा करेंगे (फिलि १:६) । वह यह कि जिस मीरास का वायदा किया है, उसे ज़रूर देंगे । रोमि ८:१७; कुल १:१२; इब्रा ६:१२; ९:१५; १ पत १:४) । वह हमें तब तक संभालेंगे जब तक हमारी देह उठायी न जाए (रोमि ८:२३), और हमेशा के लिए छुड़ायी न जाए (यूहन्ना १४:१९) । विश्वासी स्वर्गिक पिता की दौलत हैं (१ कुरि ६:१९,२०) । वह बड़ी अच्छी तरह से उन्हें संभालेंगे और खोंएगे नहीं । तुलना कीजिए यूहन्ना ६:३९,४०; १०:२७,२८; १७:११,१२ । यह भरोसा कि हमने उनकी आत्मा को पाया है हमें यह निश्चयता देगी कि यह सब सच है ।

"महिमा में परमेश्वर की बड़ाई" - पद ६,१२ ।

१:१५,१६ ***"विश्वास", "प्यार"***-१ थिस्सु १:३ ये दोनों गुण सच्चे विश्वासियों में हमेशा पाए जाते हैं । कहलाया जानेवाला विश्वास जिससे विश्वासियों के लिए प्यार नहीं पैदा होता है, सच्चा विश्वास नहीं है - १यूहन्ना ३:१४; १ कुरि १३:२

"धन्यवाद", -पौलुस ने इसका अभ्यास किया था (रोमि १:८; १ कुरि १:४; फिलि १:३; कुलु १:३; १ थिस्सु १:३) चाहे वह विश्वासियों को जानता था या नहीं । चाहे वे उसकी सेवकाई से बचे थे या दूसरों की, वह उनके लिए खुश था और धन्यवादी भी । विश्वासी परमेश्वर और उसकी कृपा की शान हैं (पद ६, १२,१४) । सबसे ज़्यादा जिस बात को पौलुस चाहता था वह यह कि लोगों की मुक्ति से और पवित्र जीवन से परमेश्वर को इज्ज़त मिले ।

"प्रार्थनाएँ" -रोम १:९, १थिस्सु १:२; १ तिमो १:३ ।

१:१७ ***"प्रार्थना करता हूँ"*** - पौलुस की यह बिनती पवित्रात्मा से प्रेरित थी । यह उन चीजों को प्रगट करता है, जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि वे लोगों के पास हों । यह दिखाता है कि हम क्या कर है । अभी उसने कहा था कि उन लोगों ने पवित्र आत्मा पाया है (पद १३) । इसलिए वह यह प्रार्थना क्यों करता है कि पवित्रआत्मा पाएँ? वह प्रार्थना करता है कि जो पवित्रात्मा उन में है वह बुद्धि की आत्मा दे । वह यह दुआ करता है कि पवित्रआत्मा जो उनमें है, उन्हें बुद्धि की आत्मा (योग्यता) दे-जिससे वे परमेश्वर के वचन को गहरी सच्चाई जानें। उसने प्रार्थना इसलिए की क्योंकि वह चाहता था, कि वे परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानें ।

परमेश्वर को खुद जानना विश्वासियों का बड़ा खजाना है । उनका आत्मिक जीवन इसी से शुरू होता है और इसी के साथ बढ़ता है-यूहन्ना १७:३; २ कुरि ४:६; इफि ४:१३; फिलि ३:८,१०; कुलु १:१०;२पत ३:१८ पौलुस को यह मालूम था कि पिता को व्यक्तिगत तरीके से जानने और जानते रहना परमेश्वर से रोशनी मिलने पर है । ज़रूरी है कि परमेश्वर अपने आप को ज़ाहिर करे, नहीं तो हम कभी उन्हें जान नहीं सकते, मत्ती ११:२७, १कुरि २:१०,११ ।

१:१८,१९ परमेश्वर सिर्फ यह नहीं चाहते कि हम उन्हें जानें, लेकिन यह कि विश्वासियों के लिए जो कुछ तैयार किया है, वह जानें ।

"आँखें" - दो तरह की आँखे हैं - शारीरिक जो दिखने वाली चीजों के लिए हैं । आत्मिक जो अनदेखी बातें देखती हैं (२कुरि ४:१८; इब्रा ११:१३; यूहन्ना ४:३५) ।

अविश्वासियों की भीतरी आँखे बन्द और अन्धी हैं - मत्ती १३:१५; २ कुरि ४:४; १यूहन्ना २:११; प्रका ३३:१८ । परमेश्वर ने विश्वासियों की आँखो को खोला है - प्रेरित २६:१८; यूहन्ना ६:३६; २ कुरि४:६ । जब ऐसा होता है, वे आत्मिक सच्चाई समझने लगते हैं, जिसे वे किसी और तरह से नहीं समझ सकते हैं । वे अपने आप को समझाने लगते है और अपने परमेश्वर को भी और यह भी कि मुक्ति है क्या । लेकिन एक ही पल में विश्वासी सब कुछ समझते नहीं है । परमेश्वर ने शुरूआत में उन्हें रौशन किया था और लगातार करते रहते हैं ।

२० शक्तिशाली योग्यता के कारण है । **परमेश्वर** ने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठाकर और स्वर्गिक स्थानों
२१ में अपने दाहिने हाथ बैठाकर, **और** यीशु को अभी और आने वाले समयों के किसी भी शासन, अधिकार, शक्ति,
२२ प्रभुता और नाम के बहुत ऊपर ठहराया । **सब** कुछ उनके पैरों के नीचे करके उन्हें सिर (प्रमुख) ठहराकर
२३ मण्डली को दे दिया । **मण्डली** उनकी देह है, मसीह से भरपूर है, जो अपने में अपनी उपस्थिति के द्वारा सभी
२,२ जगह सभी चीजों में भरपूर है । **तुम** जो अपने अपराधों और दुष्टता में मरे हुए थे, **पिछले** समयों में तुम इस
संसार के तौर तरीकों, आकाश के अधिकार के शासक (शैतान) यानि वह आत्मा जो अभी भी आज्ञा न मानने

इसलिए पौलुस ने यह बिनती की - एक ऐसी बिनती जिसे अपने लिए और दूसरों के लिए हमें करनी चाहिए । बिना आत्मिक रोशनी पाए हुए वे चाहे बाइबल कितनी पढ़ें वे ज्यादा बुद्धिमान नहीं बनेंगे । २कुरि ३:१५ से तुलना करें । पौलुस ने प्रार्थना की थी कि वे तीन बातें समझें: आशा, परमेश्वरीय मीरास और उनकी शक्ति ।

"आशा" -रोमि ५:२; ८:२३-२५ । विश्वासियों की उम्मीद यह है कि मसीह की तरह बनें और हमेशा तक उनके साथ रहें - रोमि ८:२६; २ कुरि ३:१८; १ यूहन्ना ३:२,३; यूहन्ना १७:२४ ।

"मीरास" - मसीह में विश्वासियों के पास मीरास है (पद १४) । परमेश्वर के पास उनके भीतर मीरास है । वे उसकी कीमती सम्पत्ति और दौलत हैं । वह उनको इतना चाहते थे कि अपने बेटे की जान की बाज़ी लगा दी (पद ७) । मरे हुओं में से जी उठने के समय वह अपनी मीरास को दावे के साथ ले लेंगे ।१ थिस्सु ४:१६-१८ ।

"शक्ति"-परमेश्वर की वह ताकत जो हम में हैं, हमारे लिए है, हमारी आशा को पूरी करती है । यह इस बात की गॉरण्टी है कि वह अपनी मीरास को हासिल कर लेंगे । उनकी शक्ति इतनी महान है, कि किसी और शक्ति से तुलना नहीं की जा सकती है । इसलिए वह योग्य है कि अपने लोगों को संभाल लें -यूहन्ना १०:२६ । अगले पद में पौलुस इस बात का उदाहरण देता है कि परमेश्वर ने क्या किया है, ताकि हम जानें कि परमेश्वर हमारे लिए भी कर सकते हैं ।

१:२०,२१ इन्सान के इतिहास में हम परमेश्वर की ताकत का प्रदर्शन यीशु की मौत और जी उठने में देखते हैं - मत्ती २८:६, मरकुस १६:६,१६; लूका २५:६,७,५१; प्रेरित १:३,६; २:३२,३३; रोमि १:४ फिलि २:६-११; इब्रा १:३ । मसीह अपने पिता के सिंहासन पर बैठे हैं । इस बनायी गयी सृष्टि और इसके सभी अधिकारियों और ताकतों के ऊपर की जगह यीशु की है - कुलु २:१०; प्रका १:५ । इस दुनिया में ऐसा कोई इंसान या स्वर्गदूत न हुआ है, न है जो शक्ति, अधिकार शान और इज्ज़त में यीशु के पास भी आ सके ।

परमेश्वर की वही ताकत जिसने यीशु को जिलाया था, हम में और हमारे लिए काम कर रही है - पद १६ । इस वजह से हम जीत से भी बढ़कर हैं - रोमि ८:३७ । इसी तरह से हम इस निर्दयी दुनिया में रह सकते, दुनिया शरीर और शैतान पर जीत हासिल कर सकते और अपने पृथ्वी के जीवन को खुशी से खतम कर सकते हैं । अगर ऐसा नहीं होता है तो ऐसा इसलिए है कि हम दी गयी ताकत/अधिकार का उपयोग नहीं कर रहे हैं ।

१:२२,२३ ***"उनके पैरों के नीचे"*** - प्रेरित २:३४-३६; इब्रा १:१३;२:८,६; १०:१३ ।

"सिर" - ४:१५; ५:२३; कुलु १:१८,२:१६। सिर्फ मसीह सच्ची कलीसिया के प्रधान (सिर हैं) । सिर का मतलब है चलानेवाले। यह दिमाग या भेजे की तरफ इशारा है, जो योजना बनाता, सोचता और देह को निर्देष देता है । मसीह केवल वहीं नहीं जो मण्डली के ऊपर हैं वह परमेश्वर के आत्मा से ऐसे हैं । वही जीवन और वही आत्मा उनमें हैं । "मण्डली" का यहाँ मतलब है आत्मिक देह जो उनके विश्वासियों से बनता है -यूहन्ना १७:२०-२३; १ कुरि १२:१२,१३; मत्ती १६:१८ में नोट्स देखें ।

"भरपूरी" - मसीह सारी सृष्टि को भरते हैं -४:१०; कुलु १:१७ सच्ची मण्डली उनकी भरपूरी है और उनसे ही बनती है । और बिना देह के एक सिर को पूरा और सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है । पद २३ का एक मतलब यह लगाया जा सकता है । दूसरा यह कि मसीह परमेश्वर की भरपूरी हैं । कुलु २:६,१० से तुलना करें ।

२:१-१० इन पदों में पौलुस १:१६ में शुरू किए गए विषय को जारी रखता है । "अपार शक्ति की बदली जानेवाली महानता" उसने १:२०-२३ में दिखाया था कि किस तरह से यह शक्ति मसीह में जारी थी । अब वह दिखाता है कि यह किस तरह से विश्वासियों में और उनके लिए कार्यरत है । परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और स्वर्ग (१:२०) तक उठाया । यीशु ने विश्वासियों को भी आत्मिक मौत से जिलाया और उन्हें उठाया भी (५:६) परमेश्वर की बड़ी ताकत ने मसीह को मण्डली का प्रधान बनाया (१:२२) । इसी ताकत ने विश्वासियों को नयी सृष्टि बनाकर मसीह से जोड़ दिया । (पद १०) ।

२:१ ***"मरे हुए"***-मसीह से अलग किए हुए किसी व्यक्ति के पास सच्चा आत्मिक जीवन नहीं है । इसलिए कि हर एक व्यक्ति से जो अपेक्षा है, वह नहीं करता है । (रोमि ३:२३) । प्रत्येक जन आत्मिक तरीके से तब तक मरा हुआ है जब तक मसीह उसे नयी ज़िन्दगी न दे । इस मौत का मतलब है स्वर्गिक पिता के जीवन से और संगति से अलग होना । ४:१८, यशा ५६:१,२ । उत्पत्ति २:१७; यूहन्ना ५:२४; रोमि ७:५; ८:६; कुलु २:१३; १ तिमो ५:६; याकूब १:१५; १ यूहन्ना ३:१४ । यही एक कारण है कि मुक्ति के लिए नया जन्म ज़रूरी है । देखें यूहन्ना १:१२,१३,३:३-८ ।

२:२ ***"संसार के तौर तरीकों"***-१ यूहन्ना २:१६; यूहन्ना १:१०; ७:७; १४:१७; १६:८; रोमि १२:२; १ कुरि१:२१; याकूब ४:४, २ पत १:४ ।

३ वालों में काम करता है, उसी के अनुसार जीवन जीते थे । **और** हम सभी उन्हीं में से थे, जिनका जीवन, पुराने
स्वभाव, मन की लालसाओं और उनको पूरा करने में बीत रहा था और दूसरों के समान स्वभाव से सृजनहार
४ के क्रोध के आधीन थे । **लेकिन** सृजनहार ने जो दया में धनी हैं, अपने बड़े प्रेम की वजह से, हमें प्यार दिया ।
५ उस समय भी जब हम अपनी दुष्टता की स्थिति में मरे हुए थे, तब सृजनहार ने हमें मसीह के साथ जिला
६ दिया (अर्थात् असीम दया के कारण हमें मुक्ति मिली) । **तथा** हमें अपने साथ उठाकर स्वर्गिक स्थानों में यीशु मसीह
७ के साथ बैठा दिया । ताकि आनेवाले युगों में वह यीशु मसीह के व्दारा जो हमारे लिये दयालु हैं, उस असीम
८ कृपा के बढ़ते हुए महान धन को दिखा सकें । इसी शर्तहीन कृपा और विश्वास की वजह से तुम्हें मुक्ति मिली
९ है । यह तुम्हारी किसी योग्यता से नहीं, यह मुक्ति सृजनहार की तरफ से ईनाम है । **यह** कर्मों से नहीं मिलती
१० है ताकि कोई घमण्ड न कर सके । **इसलिए** कि हम उनकी कारीगरी हैं और मसीह यीशु में उन भले कामों

"आकाश के अधिकार के शासक"- यह शैतान है । वह आत्मा के रूप में है जो आकाशीय स्थानों (६:१२) के निचले भाग में काम करता है । ऐसा लगता है कि पृथ्वी के वातावरण में से वह अपना शासन करता है। उसे इस दुनिया का "ईश्वर" और शासक कहा गया है - १२:३१; २ कुरि ४:४ । वह उन सभी में काम कर रहा है जो यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं । यूहन्ना ८:४४; प्रेरित ५:३, २ तिमोथी २:२६ से तुलना करें ।

२:३ ***"हम सभी"***-रोमि ३:६,१६; तीतुस ३:३ ।

"पुराने स्वभाव"-इसका मतलब है वह स्वभाव जो जन्म के समय माता-पिता से मिलता है । उत्पत्ति २:२१; भजन ५१:५; ५८:३; रोमि ३:६-१६ ।

"क्रोध" - पाप के खिलाफ परमेश्वर का गुस्सा बाईबल में सब जगह है । गिनती २५:३; भजन ९०:७-११, यूहन्ना ३:३६; रोमि १:१८ । क्रोध की सन्तान होने का मतलब है - परमेश्वर के गुस्से का केन्द्र होना, उनके गुस्से के लायक होना ।

२:४ ***"दया में धनी"*** - भजन ५:७,५१:१; मीका ७:१८; रोमि २:४; १०:१२; तीतुस ३:५; याकूब ५:११; १ पत १:३ । पापी होने के कारण हम सभी को दण्ड मिलना चाहिए । केवल दया हमें बचा सकती है, माफ कर सकती है । किसी और बात में कोई आशा नहीं है ।

"बड़े प्रेम"-यूहन्ना ३:१६; रोमि ५:८; १ यूहन्ना ३:१६; ४:८,६ ।

२:५ परमेश्वर ने विश्वासियों को आत्मिक रूप से ज़िन्दा किया है और मसीह के साथ एकता और संगति में लाए हैं । - यूहन्ना १:१२,१३,५:२१,२४; रोमि ५:१७;६:४,८; कुलु २:१३; १ पत १:३,२३, १यूहन्ना ३:६; ५:१,१८। यह परमेश्वर का वरदान था - पद ६; रोमि ६:२३ ।

२:६ ***"हमें अपने साथ उठाकर"*** -रोमि ६:३-५ मसीह सभी विश्वासियों के प्रतिनिधि हैं । क्योंकि वे "मसीह में" हैं १:३, उससे जुड़े हुए हैं, परमेश्वर का देखना ऐसा है कि जो कुछ यीशु के साथ हुआ वह मानों उनके साथ हुआ । उनकी नज़र में इस पृथ्वी पर विश्वासी पहले ही से जिलाए गए और स्वर्ग तक पहुँचाए गए हैं । तुलना करें कुलिस्सयों ३:१-४ ।

२:७ यहाँ हमारे लिए परमेश्वर का महान उद्देश्य है । इसका मतलब क्या है, इसकी कल्पना कौन कर सकता है।? परमेश्वर तभी सन्तुष्ट होंगे जब हमारी समझ से बाहर बड़ी आशीषों को वह हम पर उण्डेलेंगे । यह हमेशा तक वह करते रहेंगे ।

"महान धन" - १:७ ।

२:८,६ शुरू से आखिर तक मुक्ति अयोग्य लोगों के लिए एक ईनाम थी । इसमें मनुष्य की कोशिश से कुछ लेना-देना नहीं है।- प्रेरित १५:११; रोमि ३:२४; ४:४; ५:१५; ६:२३; ११:६; तीतुस ३:४-७ ।

"विश्वास की वजह से"-यूहन्ना १:१२,१३; ३:१४-१६,३६; ५:२४; ६:४७; प्रेरित १३:३८; १६:३१; रोमि १:१६; ३:२५,२८; ४:१६; ५:१;१०:६-१३; गल २:१६,२१,३:२६ ।

"सृजनहार की तरफ से इनाम" - यह मुक्ति और विश्वास की तरफ इशारा है, जिससे यह वरदान मिलता है । इसलिए हम घमण्ड नहीं कर सकते (प्रेरित १८:११; फिलि १:२६; २ पत १:१) । मनुष्य के घमण्ड की यहाँ कोई जगह नहीं है ।- रोमि ३:२७; १ कुरि १:२६-३१ । यदि कोई अपनी मुक्ति के लिए, खुद पर घमण्ड करे तो उसने मुक्ति को समझा ही नहीं । कामों से मुक्ति मिल ही नहीं सकती ।

२:१० जैसे शारीरिक जन्म में उनका कोई हाथ नहीं वैसे ही आत्मिक जन्म की बात भी है, इसे परमेश्वर करते हैं। यह सृष्टिकर्ता का कार्य है- २ कुरि ५:१७; याकूब १:१८; यूहन्ना १:१३। यहाँ एक कारण को देखें जो नए जीवन शुरू करने का है । हम भले कामों से मुक्ति नहीं पाते, लेकिन भला करने के लिए - तीतुस २:१४; मत्ती ५:१६ । परमेश्वर ने हमें भले कामों के लिए और भले कामों को हमारे लिए बनाया है । वह हमारे सामने ऐसे मौके लाते हैं । अच्छे काम मुक्ति के परिणाम हैं । यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो दिखाते हैं कि हम उनकी कारीगरी नहीं हैं (मत्ती ७:१६-२०; आदि) । जिस तरह से नए जीवन से नया फल उत्पन्न होता है, अच्छा पेड़ अच्छा फल पैदा करेगा । क्योंकि विश्वासी परमेश्वर के हाथ की कारीगरी है, निश्चय है कि वह अपना काम

११ के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें सृजनहार ने पहले ही से हमारे लिए ठहराया है । **इसलिए** याद करो, कि पहले
१२ तुम शारीरिक ''खतनावालों'' (यहूदियों) के ब्दारा गैरयहूदी और बिना ''खतनावाले'' कहलाते थे । **उस** समय
तुम मसीह के बिना इस्राएल से बाहर और प्रतिज्ञा की वाचा के लिए अनजान और इस जीवन में बिना स्वर्गिक
१३ पिता के और आशाहीन थे । **तुम** जो एक समय बहुत दूर थे, अब यीशु मसीह और उन्ही के रक्त के द्वारा
१४ पास लाए गए हो । **यीशु** हमारी सुलह हैं, जिन्होंने दोनों (यहूदियों-गैरयहूदियों) को एक किया और हमारे बीच
१५ बँटवारा करनेवाली दीवार को ढा दिया । **जिस** यहूदी निमयशास्त्र की व्यवस्था ने गैरयहूदियों को यहूदियों से
अगल कर रखा था उसे यीशु ने अपनी मौत से खत्म कर डाला । इन दोनों के बीच सुलह करके अपने में
१६ 'एक नया इन्सान' बनाया । **यह** भी कि यीशु क्रूस द्वारा स्वर्गिक पिता के साथ एक देह में सुलह कराएँ, जिसकी
१७ वज़ह से उन्होंने दुश्मनी (यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच) को खत्म कर डाला । **तुम** गैरयहूदी जो स्वर्गिक पिता
१८ से दूर थे और यहूदी जो पास थे, उन सब को सुलह की खुशखबरी दी है । **ताकि** उन्हीं के द्वारा पिता तक पवित्र
१९ आत्मा से हम दोनों की पहुँच हो । **इसलिए** अब तुम विदेशी और अजनबी नहीं रहे, लेकिन पवित्र लोगों के

करेंगे और अधूरा नहीं छोडेंगे - फिलि १:६ ।

''करने के लिये''-सन्दर्भ के आधार पर यूनानी में इसे ''आगे बढ़ना'' समझना चाहिये । ''जीना'', ''आचार व्यवहार'', ''व्यस्त रहना'' आदि में अनुवाद किया जा सकता है ।

२:११-२२ - पुराने समय में इस्त्राएल परमेश्वर का प्रिय था । उन्हें नियमशास्त्र, वाचा आदि दिए गए -रोमि ९:४,५। संसार के दूसरे देशों का इसमें कोई हिस्सा नहीं था पद १२ । वे बहुत दूर थे पद १३ । इस्त्राएल और दूसरे देशों में दुश्मनी थी - पद १४ । पौलुस कहता है, परमेश्वर ने सब कुछ बदल दिया है । मसीह में यहूदियों और दूसरे लोगों में कोई अन्तर नहीं था -पद १४-२२ । सभी विश्वासी मसीह में एक हैं । १ कुरि १२:१२,१३, गल ३:२८ से तुलना करें ।

२:११ ***''गैर यहूदी''***-यहूदियों को छोड़कर दूसरे अन्य लोग । यहूदी (खतनावाले) उन्हें बिना खतना वाले कहा करते थे । यह बेइज्जती का शब्द था-न्यायियों १४:३; १५:१८; १ शमू १४:६; १७:२६; २ शमू १:२० । खतने पर नोट्स उत्पति १७:९-१४ और गल ५:६ में देखें ।

२:१२ जो लोग यीशु में नहीं है, उनकी हालत आज भी यही है । उनके पास सच्चा ईश्वर नहीं, इसलिए मुक्ति की सही अपेक्षा भी नहीं है । (१ यूहन्ना २:२३; ५:११,१२; गला ४:८) ।

२:१३ ***''तुम''***- का अर्थ है 'गैरयहूदी' उनकी दुष्टता और अविश्वास की वजह से वे लोग परमपिता से दूर थे । मसीह आने से वे परमेश्वर के पास लाए गए । परमेश्वर की मौजूदगी के लिए एक रास्ता खुल गया - इब्रा १०:१९-२२ ।

२:१४ ***''हमारी सुलह''***- विश्वास करनेवाले यहूदियों और गैर यहूदियों के बीच मसीह एक सेतु है । यीशु में सब तरह की राष्ट्रीय सीमाएँ खतम हो जाती हैं और एकता है ।

२:१५ ***''अपनी मौत से''*** - यहूदियों और गैर यहूदियों के बीच की दुश्मनी को यीशु ने क्रूस पर खत्म कर दिया। यीशु में देशों के बीच की सभी दिवारों को ढा दिया गया - पद १६ । जिस वजह से यह दुश्मनी और बँटवारा पैदा हुयी थी, उसको खतम करने से ऐसा किया गया । यह दुश्मनी मूसा के हाथों से मिलने वाले नियमशास्त्र से शुरू हुयी थी (रोमि ७:४; १०:४) । सिर्फ मसीह में यह दुश्मनी खत्म की गयी । यह प्रायः उन लोगों में पायी जाती है, जो मसीह से बाहर हैं ।

''एक नया इन्सान'' - इसका मतलब है यहूदी और गैर यहूदी मतों से निकले हुए लोग यीशु की देह का हिस्सा हैं और यीशु उनके प्रधान हैं । यह 'नया' इसलिए है क्योंकि इसके पहले ऐसा कुछ नहीं था और यह नए आत्मिक जीवन के साथ नयी सृष्टि है ।

२:१६ ***''सुलह''*** - रोमि ५:१०; २ कुरि ५:१८,१९ के नोट्स देखें ।

२:१७ ***''दी''*** -वह शान्ति के राजकुमार हैं जो मनुष्य और परमेश्वर के साथ और मनुष्य - मनुष्य के बीच मित्रता कराने आए; जो उन्हें स्वीकार करते हैं । - यशा ९:६; लूका १:७९; यूहन्ना १४:२७; १६:३३; प्रेरित १०:३६; २ कुरि ५:२० । यीशु ने इस मेल का संदेश खुद दिया, उनके प्रेरितों ने दिया और अभी भी हर जगह अपने सेवकों से दिलवा रहे हैं ।

''दूर'' - ग़ैरयहूदी - पद १३ ''पास'' - यहूदी ।

२:१८ देखें ३:१२; रोमि ५:२, इब्रा १०:१९-२२ । चाहे व्यक्ति यहूदी हो या गैर यहूदी, मसीह के द्वारा वे स्वर्गिक पिता तक पहुँचते हैं। यहाँ एक में तीन पर ध्यान दें - स्वर्गिक पिता तक हमारी पहुँच, पवित्र आत्मा की मदद से बेटे के माध्यम से होती है ।

२:१९ पद १२ का बिल्कुल उल्टा ***''संगी नागरिक''*** का अर्थ है एक शहर या देश से रिश्ता । मिलान करें । गल ४:२६; फिलि ३:२०, इब्रा ११:१६; १२:२२ ।

''स्वर्गिक पिता के घराने के''-परमेश्वर के पास परिवार है । यह उन लोगों से बना है जो पवित्र आत्मा से उनके परिवार में उत्पन्न हुए हैं - पद ५ । आत्मिक रीति से मसीह में सभी विश्वासी भाई बहन हैं और पिता, परमेश्वर पिता हैं - २ कुरि ६:१७,१८ ।

२०-२२ मसीह में विश्वासी, परमेश्वर के घर हैं, परमेश्वर के भवन हैं । १ कुरि ३:१६; ६:१९; १ पत २:४,५ से तुलना करें । अलग-अलग शब्दों में किस तरह पौलुस विश्वासियों के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के बारे में बतलाता है ।

२० संगी नागरिक हो और स्वर्गिक पिता के घराने के हो । **यीशु** मसीह जिस इमारत का मुख्य पत्थर हैं, उन्हीं में
२१ प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर तुम बनाए गये हो । **यीशु** में पूरी इमारत बनी है और उन्हीं में ही
२२ विश्वासी लोग जुड़कर पवित्र भवन बनते जाते हैं । **तुम** भी एक साथ मिलकर सृष्टिकर्ता के लिए एक ऐसा
३ निवास स्थान बनाए जाते हो, जहाँ स्वर्गिक पिता अपने आत्मा द्वारा रहते हैं । **इसी** कारणवश मैं पौलुस तुम
२ गैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह का कैदी हूँ, **इसलिए** कि तुमने पिता की उस कृपा के दिए जाने के सम्बन्ध में
३ सुना है, जो तुम्हारे लिए मुझे दिया गया। **मसीह** के रहस्य को कैसे उन्होंने स्वर्गिक ज्ञान (प्रकाश) के द्वारा मुझे
४ बतलाया, (जैसा मैंने पहले संक्षेप में लिखा था) । **ताकि** इस चिट्ठी को पढ़ने पर, इस रहस्य के विषय में मेरी
५ अर्न्तदृष्टि को तुम समझ पाओ। **जैसा** अभी आत्मा द्वारा उनके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट
६ किया गया है, पहले के युगों में यह भेद मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया गया था । **वह** यह कि यहूदियों के साथ

वे परमेश्वर की सन्तान हैं (१:५)
परमेश्वर की मीरास हैं (१:१८)
परमेश्वर की कारीगरी (२:१०)
परमेश्वर के लोग, परमेश्वर के स्वर्ग के नागरिक और परमेश्वर का घराना (२:१६)
परमेश्वर का भवन (२:२१)
परमेश्वर का भवन एक ऐसा स्थान है जहाँ उपासना की जाती है और बलिदान चढ़ाए जाते हैं । इसलिए परमेश्वर के लोगों से परमेश्वर का जीवित भवन बनता है - रोमि १२:१; इब्रा १३:१५,१६ ।

२:२० ***"प्रेरितों"*** - १:१; मत्ती १०:२

"भविष्यद्वताओं" -शायद यह पुराने नियम के नबियों की तरफ या न्यू टेस्टामेन्ट के नबियों की तरफ इशारा हो सकता है (३:५,४:११; १कुरि १२:२८) या दोनों की तरफ ।

"इमारत का मुख्य पत्थर" - १ पत २:६; यशा २८:१६ । घर बनानेवाले कोने के पत्थर को पहले काटते हैं । यह इमारत का सबसे ज़रूरी हिस्सा होता था । इसके द्वारा दिवारों को एक सीधी लकीर मिलती थी, जिससे दो दीवारें जुड़ती थीं इसी से पूरी इमारत को मज़बूती और खूबसूरती मिलती थी ।

२:२१ ***"बनते जाते"***-परमेश्वर की ईमारत पूरी बनी नहीं है । जैसे-जैसे नए लोग आते जा रहे हैं, यह बढ़ती जा रही है । इमारत मसीह में एक बनी है और बढ़ती जाती है । विश्वासी जीवित पत्थर की तरह हैं, आत्मिक भवन में बने हुए हैं - पत २:५ । यह सोचना भी नहीं चाहिए, कि हमारे चूक जाने से, वह हमें निकाल देंगे और गलती मानकर छोड़ देने से वापस जोड़ देंगे । ऐसा वह बार- बार नहीं करते रहते हैं। परमेश्वर एक अच्छी योजना बनानेवाले और इमारती इंजिनियर हैं । पत्थर को वे स्थायी रूप से लगाते हैं। सृष्टि की नींव रखे जाने से पहले उन्हें मालूम था कि कौन से पत्थर को कहाँ लगाया जाए - १:४,५ । इसलिए उन्हें लगाने के बाद निकालने की बात ही नहीं है ।

२:२२ ***"तुम भी"*** - तुम गैर यहूदी विश्वासी ।

"निवास स्थान" - निर्गमन २५:८, प्रका २१:३ के नोट्स देखें । मसीह यीशु के विश्वासी इस पृथ्वी पर परमेश्वर के मात्र एक भवन के हिस्सा हैं । मनुष्य के हाथों से बनाए गए किसी भवन में वह नहीं रहते हैं - प्रेरित १७:२४,२५ ।

३:१ ***"इसी कारणवश"*** - २:२०-२२ ।

"कैदी"- इस चिट्ठी को लिखते समय पौलुस जेल में था । मसीह के लिए निष्ठा और गैर यहूदियों में किए गए काम की वजह से वह कारावास में था ।(प्रेरित २१,२२) । इसलिए वह अपने आप को यीशु का कैदी कहता है । वह यह भी जानता था कि बिना मसीह की इच्छा के लोग उसे जेल में नहीं डाल सकते थे ।

३:२ ***"तुम्हारे लिये मुझे दिया गया"***- पौलुस गैरयहूदियों के लिए प्रेरित था - गल २:७-६; प्रेरित ६:१५; २२:२१।

३:३,४ ***"स्वर्गिक ज्ञान"*** - गल १:११,१२

"रहस्य"- मत्ती १३:११; रोमि ११:२५; १६:२५; १ कुरि १५:५१ के नोट्स देखें । पद ६ में वह बतलाता है कि कौन से रहस्य के बारे में कह रहा है ।

"संक्षेप में"- शायद पहले दो अध्यायों में उसने जो कुछ कहा उसके बारे में कह रहा है जैसे कि १:६,२:१६।

३:५ रोमि १६:२५,२६; कुलु १:२६,२७ । इन प्रेरितों और नबियों की जो शिक्षा न्यू टैस्टामॅन्ट है, वह मनुष्यों की बनायी हुयी नहीं लेकिन परमेश्वर की तरफ से है ।

३:६ २:११-२२ में उसने जो कहा उसका यहाँ निचोड़ बतलाता है । वह मसीह के शुभसंदेश पर भरोसा रखने के तीन फायदे बताता है । वे लोग यहूदी विश्वासियों के साथ उत्तराधिकारी, एक सच्ची मण्डली के सदस्य, मसीह की देह और यहोवा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के भागीदार हैं । यहाँ "वायदों" मुक्ति या पवित्र आत्मा की तरफ इशारा हो सकता है (१:१३)

३:७,८ ध्यान दें, पौलुस शुभसंदेश में अपनी सेवा को क्या समझता था । उसके लिए यह एक अद्‌भुत ईनाम था। यदि मण्डली में सभी

७ एक ही देह में गैर यहूदी मीरास, सदस्यता और शुभसंदेश व्दारा उन्हीं वायदों में हिस्सा पाएँ । **जिस** शुभसंदेश
का मैं सेवक बना, उस स्वर्गिक पिता की बड़ी कृपा के ईनाम के अनुसार, जो मुझे उनकी शक्ति के प्रभावशाली
८ रूप से कार्य करने की वजह से दिया गया । मैं सभी पवित्र लोगों में छोटे से भी छोटा हूँ, मुझे यह कृपा मिली
९ कि मैं गैरयहूदियों को मसीह की अथाह सम्पति के बारे में बता सकूँ । **स्वर्गिक** पिता जो सृजनहार हैं जिन्होंने
१० सब कुछ मसीह के द्वारा बनाया, दुनिया की शुरूआत से जिनमें इस भेद की बात छिपी हुयी थी । **ताकि** अभी
सृष्टिकर्ता के तमाम ज्ञान को मण्डली के द्वारा स्वर्गिक स्थानों में शासकों और अधिकारियों को बताया जा सके ।
११ **जिसे** उन्होंने हमारे स्वामी यीशु मसीह में अपने अनन्तकालिक इरादे को पूरा करने के लिए हमें ठहराया था ।
१२ **यीशु** मसीह की वफ़ादारी और हमारे विश्वास की वजह से हमें स्वर्गिक पिता तक हमारी पहुँच के लिए दिलेरी और
१३ भरोसा है । **इसलिए** मैं तुमसे बिनती करता हूँ, कि तुम्हारे लिए मेरे दुखों के कारण हिम्मत मत हारो, क्योंकि
१४ यही मेरे लिए इज्ज़त की बात है । **इसलिए** मैं अपने स्वर्गिक स्वामी यीशु मसीह के पिता के सामने अपने घुटने
१५,१६ टेकता हूँ । **जिनके** द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के हर एक घराने का अस्तित्व है, **कि** उनकी महिमा के धन के अनुसार

का यही नज़रिया हो, तो कितना बड़ा बदलाव आएगा ।

"शक्ति"-२ कुरि ३:५,६; कुलु १:२९; प्रेरित १:८ । सिर्फ परमेश्वरीय शक्ति किसी को शुभसंदेश का अच्छा सेवक बना सकती है ।

"छोटे से भी छोटा"- यहाँ अपने बारे में पौलुस का विचार देखें । दुख की बात यह है कि कुछ लोग अपने को सर्वोत्तम विश्वासी समझते हैं ।

"अथाह संपत्ति"-पद १९; १:७,१८; २:७ । कुछ लोग शुभसंदेश को यों ही समझते हैं ।(१ कुरि १:१८,२३ से तुलना करें) शायद ही वे यह जानते हैं कि बाइबल ऐसे आत्मिक धन की बात करती है जो कोई भी समझ नहीं सकता है । मसीह की इस दौलत के बारे में बताने से बढ़कर और कोई बात नहीं हो सकती है ।

३:९ पुराने समयों में परमेश्वर ने दूसरी सच्चाईयों को लोगों पर ज़ाहिर किया । लेकिन यह सच्चाई उन को नहीं बतायी । लोगों को यह बतलाने के लिए उन्होंने पौलुस पर यह प्रगट किया ।

"सृजनहार" -पौलुस चाहता था कि लोग यह जानें कि वह किसी देवता-देवी के बारे में नहीं कह रहा था, लेकिन सृष्टिकर्ता के बारे में (उत्पत्ति १:१) ।

३:१० परमेश्वर मण्डली के द्वारा सिखाते हैं (१:२२,२३) । यहूदियों और गैर यहूदियों को मसीह में एक देह बनाया। ऐसा मसीह की मौत से ही हो सका - ये सब बातें परमेश्वर की महान बुद्धि का सबूत हैं ।

"शासकों और अधिकारियों"-आत्मिक अनदेखें संसार में दुष्ट और भली शक्तियाँ हैं (६:१२, कुलु १:१६;१ पत ३:२२; दानि १०:१२,१३ । यहाँ शायद उसका इशारा भले या अच्छे अधिकारियों की तरफ है । मण्डली के साथ जो परमेश्वर के तरीके हैं, उनके विषय विश्वासियों को आश्चर्य और प्रशंसा से भर जाना चाहिए ।

३:११ ***"अनंतकालिक इरादे"***- मण्डली के बनाए जाने और उन्नति के सम्बन्ध में जो कुछ पृथ्वी पर हो रहा है, वह पुरानी बड़ी योजना के अनुसार है - १:११ ।

३:१२ २:१८ देखें ***"उन में"***-यूहन्ना १४:६ ।

"दिलेरी और भरोसा" -इब्रा ४:१६; १०:१९-२२ ।

"विश्वास की वजह से" -रोमि ५:२ ।

३:१३ ***"हिम्मत मत हारो"***-उनके यह सोचने की गुंजाइश थी कि पौलुस यदि परमेश्वर का सेवक था, तो फिर दुःख तकलीफ क्यों सह रहा था । या फिर यह कि यदि वह सताव में होकर जा रहा था तो उन्हें भी इस हालत से होकर गुज़रना पडेगा । किसी भी हालत में पौलुस नहीं चाहता था कि वे लोग हिम्मत हार जाएँ। हालाँकि अपनी तकलीफों के लिए वह मसीह में हमेशा खुश रहता था - कुलु १:२४; २ कुरि १२:१०; रोमि ५:३ ।

"दुखों"-पद । २ कुरि ११:२३-२९ से तुलना करें, जहाँ वह उन्हीं के लिए दुःख उठा रहा था । २ कुरि १:६, २ तिमो २:६,१० ।

"तुम्हारे लिये इज्ज़त की बात" -पौलुस के दुख परमेश्वर के प्यार (और उसके प्यार) जो उनके लिए या के सबूत थे । मसीह के लिए दुख उठाया जाना मसीह और उसकी "देह" की बड़ाई के लिए था ।

३:१४,१५ जिस विचार पर पहले पद में पौलुस रूक गया था, वहीं से वह फिर से शुरू करता है ।

"पिता"- मत्ती ५:१६ पर नोट्स देखें । परमेश्वर का परिवार विश्वासियों से मिल कर बना है (२:१९) । परमेश्वर के पास पिता का सच्चा स्वभाव और हृदय है ।

३:१६ ***"महिमा के धन"*** -पद ८,१७:१८;२:७; फिलि ४:१९ । अपनी प्रार्थनाओं में जो १:१७-१९ में है, पौलुस ने यह दिलचस्पी दिखायी

१७ वह ऐसा होने दें, कि तुम भीतरी जीवन में उनकी आत्मा की मदद से मज़बूत किए जाओ । **और** विश्वास
१८ के द्वारा मसीह तुम्हारे दिलों में बसें, ताकि परमेश्वरीय प्यार में गहराई से जड़ पकड़ते जाओ। और सभी पवित्र
१६ लोगों के साथ समझ सको, कि इस प्यार की चौड़ाई, लम्बाई, गहराई और ऊँचाई क्या है । **यह** भी कि मसीह
के उस प्यार को जान सको जो समझ के बाहर है, ताकि तुम स्वर्गिक पिता की सारी भरपूरी से भर जाओ ।
२० **अब** जो हमारे जीवन में काम करनेवाली शक्ति के द्वारा हमारे माँगने या सोचने से कहीं अधिक करने के
२१,**४** योग्य हैं, **सभी** पीढ़ी से पीढ़ी तक मसीह यीशु के द्वारा उन्हीं को सम्मान मिलता रहे । **इसलिए** मैं मसीह यीशु

कि उन्हें बुद्धि मिले और परमेश्वर की बड़ी शक्ति को वे जाने । यहाँ वह दुआ करता है कि बल से मज़बूत किए जाएँ और मसीह के महान प्यार को जाने ।

"उनकी आत्मा"-विश्वासियों में रहने के लिए पिता ने पवित्रआत्मा दिया है (१:१३) उनके लिए वह भीतरी आत्मिक बल है ।

३:१७ ***"बसें"***-पौलुस विश्वासियों को लिख रहा था । सभी विश्वासियों में मसीह हैं । रोमि ८:६,१०; २ कुरि १३:५; कुलु २:२७ । पद १६ के नोट्स देखिए । यहाँ पौलुस की बिनती यह है कि उन्हें और अधिक मिले। वह चाहता था कि यीशु अपना जीवन उनमें और उनके द्वारा जीएँ (गल २:२०) मसीह उनमें निवास करें (यूहन्ना १४:२३) । यह मुमकिन नहीं है कि मसीह हममें हों हमारे लिए हों और हम उन्हें सिर्फ मेहमान कि तरह ही जानें । मसीह चाहते हैं, कि हमारे पूरे जीवन में वास करें- वह चाहते हैं कि प्यार से हम आज्ञा मानने और सहभागिता रखने के लिए आप को सौंपे । वह हमारे, मालिक होने के साथ हमारे सोचने, योजना बनाने और करने में भी हमारे मालिक बने रहना चाहते हैं ।

हमें अपने घरों (हृदयों) का मालिक नहीं बनना चाहिए, बल्कि जो उसमें रहते हैं, उन्हें । वह सर्वश्रेष्ठ राजा हैं और अपने महल में हमारे हृदयों में सिंहासन लगा कर बैठना चाहते हैं । ऐसी तभी होगा, अगर परमेश्वर का आत्मा हमें अपने बल से मज़बूत करे । (पद १६) । अगर ऐसा नहीं होता है तो हम ऐसा जीवन जीएँगे, जिसमें यीशु कहीं कोने में पड़े रहेंगे ।

"विश्वास के द्वारा" - सच्चा मसीही जीवन शुरू से आखिर तक भरोसे का जीवन है । २:८; रोमि १:१७; कुलु २:६ जब तक हम यीशु पर भरोसा रखेंगे, तब तक यीशु हमारे मन में इज्ज़त पाएँगे । अगर हमने उन पर मुक्ति के लिए भरोसा किया है तो यह भरोसा रखें कि वह हमें पूरी तरह से भर कर रखें । इसलिए कि उन्होंने ज़ाहिर किया है कि वह ऐसा करना चाहते हैं, हम क्यों उन पर भरोसा न करें ?

"प्यार"- यीशु और एक विश्वासी के बीच यह एक बहुत खास रिश्ता है (यूहन्ना १४:२३,२४; १ कुरि १३:१३)। प्यार एक अच्छी जमीन है जहाँ विश्वासियों को मज़बूती से जड़ पकड़ते हुए बढ़ते जाना है ।

३:१८ मसीह के प्यार का ज्ञान विश्वासियों में प्यार को प्रेरित करता है (१ यूहन्ना ३:१६; ४:६-१२,१६) । इस लिए हमें उनके प्रेम की महानता को जानना है ताकि प्यार में जड़ पकड़ते हुए उनसे इस तरह का प्यार करें, जैसा किए जाने की ज़रूरत है । मसीह का प्यार सारी ऊँचाई, गहराई और चौड़ाई से कहीं बढ़कर है (रोमि ११:३३)।

३:१६ हम उस प्यार को कैसे जान सकते हैं, जो असीमित है, अनन्त को कैसे जाना जा सकता है ? परमेश्वर का आत्मा हमें इसका भीतरी ज्ञान और अनुभव देता है । समुद्र को जानने के लिए इसका अध्ययन काफी नहीं है लेकिन इस में तैरकर भीतर जाना जरूरी है । परमेश्वर स्वयं अनन्त और असीमित हैं । मनुष्य पूरी तरह से नहीं उन्हें समझ सकता । विश्वासी उन्हें जानते हैं - मत्ती ११:२७; इब्रा ८:११; १ यूहन्ना ५:२० । ऐसा ही मसीह का प्यार है ।

"भरपूरी से भर जाओ"-मसीह से भरने का मतलब है, परमेश्वर और उनके आत्मा से भरा जाना । यह सच्चाई कि एक ही समय में सभी जगह के विश्वासियों के भीतर यीशु रहते हैं, इस बात का सबूत है कि यीशु परमेश्वर हैं । सिर्फ परमेश्वर ही एक समय में सभी जगह पर रह सकते हैं । फिलि २:६; लूका २:११ में यीशु के ईश्वरपन पर देखें ।

ईश्वरीय भरपूरी के लिए इससे बढ़कर और कौन सी प्रार्थना हो सकती है ? लेकिन क्या हमारे छोटे हृदय परमेश्वर की सारी भरपूरी को अपने में रख सकते हैं ? क्या एक प्याले में समुद्र समा सकता है ? यह समुद्र के पानी से ऊपर तक भरा रह सकता है । इसी तरह विश्वासी का हृदय भी है । विश्वासियों का यही लक्ष्य होना चाहिए ।

३:२० पद १६-१६ की अद्‌भुत बातें हमारे लिए संभव हैं , निश्चित रीति से । अगर संभव नहीं होतीं तो वह हमारे सामने रखते ही नहीं कि हम उन्हें चाहते । परमेश्वर ये हमारे जीवन में कर सकते हैं, हमारी कल्पना से बढ़कर भी । तो फिर सभी विश्वासियों का यह अनुभव क्यों नहीं है ? इसलिए कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम इन्हें चाहें अपना समर्पण करें, सब बातों में उनकी मानें, भरोसा रखें और करते रहें । (पद १७; यूहन्ना १४:२१; रोमि १२:१,२, यिर्म २६:१३; यशायाह ५७:१५)

३:२१ ***"उन्हीं का सम्मान"*** -१:६,१२,१४ । क्योंकि परमेश्वर ही विश्वासियों में और उनके लिए सब कुछ करते हैं यह वाजिब है कि सारा सम्मान उन्हीं को मिले ।

४:१ पिछले अध्यायों में पौलुस ने यह दिखाया कि मसीह में हमें क्या होने के लिए बुलाया गया है-स्वर्गिक पिता के बेटे-बेटियाँ,उनकी दौलत, मसीह की देह, परमेश्वर का भवन, मसीह का घर । पौलुस चाहता है कि हम इस बुलाहट के योग्य जीवन जीएँ । हमें ऐसा बर्ताव ही करना चाहिए जैसा परमेश्वर के विशेष बच्चों को सोहता है। यह महान सत्य कि 'हम मसीह में हैं क्या', याद रखना चाहिए और उसके प्रकाश में जीना चाहिए।

२ का कैदी तुमसे यह कहता हूँ, कि अपनी बुलाहट के लायक जीवन जीयो । **पूरी** दीनता, नम्रता और धीरज के
३ साथ प्यार में एक दूसरे की सहो । **मेल** के बन्धन में पवित्रआत्मा की एकता को बनाए रखने की कोशिश करो ।
४,५ **देह** एक ही है, एक आत्मा है, जिस तरह तुम अपनी बुलाहट की एक आशा में बुलाए गये हो । **एक** ही स्वामी,
६ एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है, सबके एक स्वर्गिक पिता, जो सबसे बड़े हैं, **एक** यहोवा परमेश्वर जो
७ सबके पिता हैं, सबसे बड़े सबके बीच और सब में हैं । **लेकिन** मसीह ने अपनी उदारता की माप से हममें
८ से हर एक को शर्तहीन कृपा दी है । **बाईबल** में लिखा है : "जब वह ऊँचाई (स्वर्ग) पर चढ़े उन्होंने गुलामी
९ को बाँधने में अगुवाई की और लोगों को ईनाम दिए" **"उनके चढ़ने"** का क्या यह मतलब है कि,
१० वह पहले पृथ्वी के निचले भागों में भी उतरे ? **वह** जो नीचे उतरे, वही हैं जो आकाशों के ऊपर चढ़ गए, ताकि
११ सम्पूर्ण लोक में समा जाएँ । **वह** यीशु ही थे जिन्होंने अलग-अलग लोगों को प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, संदेश देनेवाले,

---

"योग्य जीवन जीयो" - योग्य तरीके से जीना और बर्ताव करना- कुलु १:१०; १ थिस्स २:१२ । २:१० में चलने पर जो नोट्स हैं, उन्हें देखें । एक योग्य जीवन वह है जिसमें परमेश्वर और लोगों के लिए प्यार है । एक प्रेम रहित व्यक्ति चाहे कितना भी सही हो, नैतिक हो, त्यागी और विश्वास योग्य हो, परमेश्वरीय बुलाहट के हिसाब से नहीं जी रहा है ।

४:२ ***"दीनता, नम्रता"*** - मत्ती ५:३,५; ११:२९; कुलु ३:१२; १ पत ५:५,६ ।

"धीरज" - ईश्वरीय धीरज के एक दायरे के विषय में पौलुस बतलाता है । यह है प्यार से एक दूसरे को सहना । यदि हमारे पास मसीह का प्यार नहीं है तो एक दूसरे के साथ रहने पर होनेवाली समस्याओं को सहा नहीं जा सकता । (१ कुरि १३:४) ।

४:३ ***"पवित्रआत्मा की एकता"***- सभी विश्वासियों के मसीह में एक देह बनाने के लिए परमेश्वर के आत्मा ने इस एकता को बनाया है (१ कुरि १२:१२,१३) । यह संस्था की एकता नहीं है, विश्वासी इसे पैदा नहीं कर सकते (यूहन्ना १७:२०-२३) । लेकिन इस एकता में विश्वासी लोग एक दूसरे के साथ शान्ति से रह सकते हैं । यही पौलुस करने के लिए भी कहता है (रोमि १२:१६,१८; २ कुरि १३:११,१पत ३:११) । यह करने के लिए कोशिश की ज़रूरत है । कोशिश अपने आप नहीं होती है । अगले पदों में पौलुस यह दिखाता है कि एकता का आधार क्या है । यह भी कि इससे फायदे क्या हैं ।

४:४ ***"देह"***-१:२२,२३; ३:६ । "आत्मा" -१:१३; २:२२ । ***"आशा"*** -१:१८ ।

४:५ ***"स्वामी"*** - १:२, १ कुरि ८:६ (लूका २:११ में नोट्स देखें) ।

"विश्वास" - १:१३,१५,२:८ ।

"बपतिस्मा"-इफिसियों में सिर्फ इसी जगह बपतिस्मे के बारे में है । वह नहीं कहता कि पानी का या पवित्रआत्मा का । ऐसा लगता है कि वह पानी के बपतिस्मे की बात कह रहा है । बपतिस्मा अपराध, क्षमा और मसीह के साथ एक होने को दिखाता है । पानी के बपतिस्मे पर मत्ती ३:२; मरकुस १६:१६; प्रेरित २:३८; १ कुरि १४:१८ में देखा जा सकता है । आत्मा के बप्तिस्मे के बारे में प्रेरित १:५, १ कुरि १२:१३, रोमि ६:३,४ के नोट्स भी देखें ।

४:६ ***"यहोवा और परमेश्वर"*** -१:२,३,१७; ३:१४ ।

"तुम सब में" - सभी विश्वासियों में (२:२२) । यहोवा परमेश्वर सभी लोगों में नहीं हैं (२:१२,४:१८) । शब्द "एक" पद ४-६ में सात बार आता है । क्योंकि इन सात बातों में सभी विश्वास करनेवाले एक हैं, 'शान्ति के बन्धन' में उन्हें (पद ३) एकता बनाए रखनी चाहिए । इन पदों में त्रिएकत्व - एक आत्मा, एक स्वामी, एक पिता, तीन व्यक्ति, एक परमेश्वर पर ध्यान दें । (यहाँ उसने सात बातें बतायी हैं) । दूसरी बातों में वे एक दूसरे से भिन्न हैं । यह बात उनकी आत्मिक योग्यताओं और काम के बारे में सच है ।

४:७ रोमि १२:४-८; १ कुरि १२:४-११ ।

४:८ भजन ६८:१८ ।

४:९ ***"पृथ्वी के निचले भागों"***-शायद यहाँ उसका इशारा मरे हुओं के अनदेखे संसार की तरफ है (रोमि १०:७) ।

४:१० ***"ऊपर चढ़ गए"*** - १:२०,२१; प्रेरित २:३१-३५ ।

"समा जाएँ" - यिर्म २३:२४ देखिए जो दिखाता है, कि यहोवा परमेश्वर ऐसा करते हैं । बाइबिल में यह इस सच्चाई का भी एक सबूत है कि यहोवा मसीह में होकर आए थे । लूका २:११ में नोट और पद देखें ।

४:११ तुलना करें १ कुरि १२:२८

"प्रेरित" मत्ती १०:२

"भविष्यद्वक्ता" -२:२०;३:५ । उत्पत्ति २०:७ में और १ कुरि १२:१०,२८ में नोट्स देखें ।

"संदेशदेनेवाले" - जिन्हें इस का खास वरदान है कि वे यीशु के संदेश को समझाएँ ।

"पास्टर और शिक्षक" -ये दोनों शब्द एक ही तरह के लोगों की तरफ इशारा हैं । सभी पास्टरों के पास शिक्षा का वरदान होना चाहिए । यदि उन्हें परमेश्वर ने यह काम उन्हें दिया है, तो ज़रूरी है कि इसे पूरा करने के लिए ज़रूरी योग्यताओं के लिए वे

१२ पास्टर और शिक्षक ठहराकर दे दिया । **ताकि** पवित्र लोग सेवा के लिए तैयार किए जाएँ, ताकि मसीह की
१३ देह(मण्डली) उन्नति करती जाए । **जब** तक हम विश्वास की एकता, स्वर्गिक पिता के बेटे के ज्ञान, बुध्दिमान
१४ व्यक्ति बनने और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ । **ताकि** हम बच्चों के समान इधर से उधर तमाम
१५ सिध्दान्तों के झोकें से लोगों की चालाकी और धूर्तता, और धोखाधड़ी से हिलाए डुलाए न जाएँ । **लेकिन** प्यार
के साथ सच बोलते हुए मसीह के समान जो मण्डली के प्रधान हैं, हर तरह से और अधिक बढ़ते जाएँ ।
१६ **यीशु** से सारी देह (मण्डली), प्रत्येक जोड़ में एक साथ बंधकर हर एक भाग अपना-अपना काम करते हुए,
१७ प्यार से मण्डली को बढ़ने और मज़बूत होने में सहायक हो । **मैं** यह मसीह में ज़ोर देकर इसलिए ऐलान करता
१८ हूँः कि तुम दूसरों की तरह बेकार के सोच विचार के लोगों के समान जीवन न बिताओ । **क्योंकि** उस नासमझी की
वजह से जो उनमें है और मन की सख्ती की वजह से उनकी बुद्धि अंधेरी हो गयी है और परमेश्वर की जिन्दगी

परमेश्वर की तरफ अपनी नज़र करें ।

४:१२ लोगों को व्यक्तिगत रीति से आत्मिक वरदान देने और उन लोगों को कलीसिया (मण्डली) के लिए देने का यही कारण है । तुलना करें १ कुरि १२:७ ।

"पवित्र लोग सेवा के लिये तैयार किये जाएँ"-यूनानी भाषा के जिस शब्द का अनुवाद यहाँ किया गया है, वह वही नहीं है जो मत्ती ५:४८ या इब्रा ६:१ में है। यहाँ मतलब है तैयार करना फिट बनाना या वह प्रकिया जो पूरे होने तक ले जाता है ।

"सेवा के लिये" -मसीह में मज़बूत करने के लिए यहाँ यीशु के लोग हैं जिन्हें दूसरों के लिए सेवा करनी है । (गल ५:१३)। यह पास्टरों और टीचरों और शुभसंदेश देनेवालों की ज़िम्मेदारी है कि इसे करने के लिए वे उन्हें तैयार करें। जिसे पूरे समय की सेवा कहा जाता है उसमें हर एक विश्वासी नहीं है । लेकिन हर विश्वासी को हर समय तैयार रहना चाहिए कि साथी विश्वासियों की सेवा करें ।

"देह उन्नति करती जाए" - रोमि १४:१६; १ कुरि १४:१२,२६; १थिस्सु ५:११ । हर एक यीशु के विश्वासी का यही लक्ष्य होना चाहिए । हमेशा उसे कोशिश करनी चाहिए कि दूसरों को कैसे मज़बूत कर सके । आप ही सोचिए अगर इस बात को हर एक अमल में लाए ।

४:१३-१५परमेश्वर की चाह यही है कि हम सभी आत्मिकता में बढ़ते जाएँ । तुलना करें १ कुरि३:१-३; इब्रा.५:११-६:१; १पत २:१-३; २ पत ३:१८ । यहाँ पद १३ में यह समझदारी यीशु मसीह के ज्ञान और विश्वास की एकता है । पद १५ में यही समझदारी सारी आत्मिक बातों के बारे में है । हमें मसीह में और उनके कद तक तब तक बढ़ते रहना चाहिए, जब तक उनकी भरपूरी को हासिल न कर लें । सम्पूर्ण मण्डली के लिए यही परमेश्वर की कामना है । वह इसे पा भी लेंगे । व्यक्तिगत तरीके से हम सभी को यह प्यार में सच बोलने से प्राप्त करना है । (पद १५)

यह आत्मिक विकास और उन्नित के लिए बहुत ज़रूरी है । यदि हम उन्नति करना चाहते है, तो बाईबिल में परमेश्वर के बताए गए सत्य को एक दूसरे के साथ बाँटना चाहिए । (२,२५; ६:१४; भजन १५:२; २५:५; ३१:५; ५१:६; नीति ६:१६,१७; १२:२२; १ कुरि ५:८ कुलु ३:६; १ कूहन्ना २:२१) । सच्चाई ही वह जमीन है, जिसमें मण्डली को बोया गया है । सच्चाई ही वह खाना है, हवा है जिसकी इसे ज़रूरत है । जब सच्चाई खो जाती है तो सब कुछ खो जाता है । ज़रूरी है कि हम सच्चाई से प्यार करें और सच्चाई बोलना सीखें । यह सब कुछ प्यार भरे दिल से होना चाहिए । जिन बातों को पद १४ में परमेश्वर गलत ठहराते हैं, उन पर चलने वालो के बिल्कुल यह विरोध में है ।

४:१४ रोमि १६:१७,१८; २कुरि ११:१३-१५; कुलु २:४; १तिमो ४:२ ।

"हिलाए डुलाए"- ये उन लोगों के साथ होता है जो परमेश्वर के वचन समझते नहीं और मसीह में बढ़ते नहीं । तुलना करें गल १:६,७; ३:१ ।

४:११६ ***"जोड़ में एक साथ बंधकर"*** -एक शारीरिक देह तमाम तन्तुओं, मांसपेशियों और हड्डियों आदि से बनी रहती है । परमेश्वर के आत्मा से आत्मिक बन्धन से बन्धकर मसीह की देह (मण्डली) बनी है। (१कुरि १२:१२-२७) । देह के हर एक सदस्य की ज़िम्मेदारी यह है कि देखे कि सभी सदस्य प्यार से एक दूसरे को मज़बूत करते हैं ।

४:१७ ***"जीयो"*** - ४:१ यदि हम दुनिया के लोगों की तरह ही जीवन जी रहे हैं, तो हम मसीह को खुश करने वाला जीवन नहीं जी रहे हैं (२:२,३) । इसलिए कि दूसरे लोग संसारिक जीवन जी रहे हैं, हमें नहीं जीना चाहिए ।

"बेकार के सोच-विचार"-रोमि १:२१; प्रेरित १४:१५; १पत १:१८ । बहुत से लोग यह घमण्ड करते हैं कि वे बहस करके दूसरों को हरा सकते है । उनका सोचना, खासकर धार्मिक और दार्शनिक सोच-विचार परमेश्वर की निगाहों में खाली और बेकार है ।

४:१८ चार चरणों में पौलुस दुनिया के उन लोगों की हालत को बतलाता है जो मसीह बिना हैं ।

"बुद्धि अंधेरी" - ६:१२; भजन ८२:५ । यूहन्ना १:५;३:१६; प्रेरित २६:१८; २ कुरि ४:४; १पत २:६; १यूहन्ना २:११ ।

"परमेश्वर की ज़िन्दगी से अलग" परमेश्वर के जीवन से २:१२; यूहन्ना १४:१७; रोमि ८:६,१६; यहूदा १६ ।

"नासमझी"-निसंदेह हालांकि वे बहुत कुछ जानते हैं? वे एक सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते हैं ।१ यूहन्ना १५:२१, १६:३; रोमियों

१९ से अलग हो गए हैं। **वे** हर तरह से सुन्न हो गए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने आप को हर तरह की गदंगी और लालच
२० के अभ्यास के लिए कामुकता को सुपुर्द कर दिया है। **लेकिन** तुमने मसीह से ऐसा करना नहीं सीखा है,
२१ **अगर** सचमुच में तुमने उनसे सुना और उनके द्वारा सही बातें सिखाए गए हो।
२२ **जैसा** तुम्हें पुराने चाल चलन के बारे में सिखाया गया है :पुराने मनुष्य को उतार डालो जो अपने
२३,२४ धोखे की चाह की वजह से भ्रष्ट है **और** अपने मन की आत्मा में नए होते जाओ। **नयी** इन्सानियत को पहन लो,
२५ जो सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजनहार के समान बनाया गया है। **इसलिए** झूठ को हटाकर, प्रत्येक व्यक्ति
२६ को अपने पड़ोसी से सच बोलना चाहिए; क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य हैं। **गुस्सा** तो करो, लेकिन गुनाह मत
२७,२८ करो। सूरज ढलने से पहले तुम्हारा गुस्सा ठंडा हो जाए। **शैतान** को कुछ भी मौका मत दो। **जो** इन्सान पहले
चोरी किया करता था, वह आगे को ऐसा न करे। इसके बजाए उसको अपने हाथ से कुछ भलाई करने के लिए

१:२२, १कुरि १:२१; १यूहन्ना २:४।

"बुद्धि अंधेरी" मसीह के बिना यह हालत सभी लोगों की है। २कुरि ४:४ वे तुलना करें। यह तो दुख की बात होती है अगर किसी को दिखता नहीं है। उससे ज़्यादा दुख की बात तब है जब आत्मिक बातों के बारे में अन्धापन है जब मसीह की सच्चाई दिखती नहीं। यहाँ यूनानी शब्द 'अन्धापन' का मतलब "कठोरता" और 'असंवेदनशीलता' या 'सुन्न होना' भी हो सकता है।

४:१९ २:३ देखें। यह कठोर मन, अन्धेपन का परिणाम है - लोग नैतिक और क्या जायज है, यह भावनारहित हो जाते हैं। पाप फिर पाप नहीं लगता और वे उस पाप से इन्कार करते हैं। अगला कदम यह है कि लोग सेक्स सम्बधित और दूसरी गंदी बातों में लिप्त हो जाते हैं।रोमि १:२४ -३२ सत्य और भयानक वर्णन है।

"कामुकता"- शारीरिक अभिलाषा कभी भी सन्तुष्ट नहीं की जा सकती है। जितना लोग इसे पूरा करते हैं, उतनी ही यह बढ़ती जाती है।

४:२०,२१ कुछ मसीही लोग भी पद १९ का सा जीवन जीते हैं। जो कुछ भी उन्होंने मसीह के बारे में सीखा है, उसके विपरीत जीवन जीते हैं।

"जिस तरह से यीशु में सच्चाई है"-यूहन्ना १:१७; १४:६। जो कुछ पद १७-१९ में लिखा है।

४:२२ ***"पुराने मनुष्य"***-रोमि ६:६ से तुलना करें। मसीह के पहले पुराना स्वभाव और मुक्ति से पहले हम जो कुछ थे। मतलब कि हमारा पुराना जीने का तरीका (२:१-३) यह पुराना जीवन मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है और विश्वासियों ने इसे उतार दिया है (कुलु ३:९)।

पौलुस क्यों कहता है कि वे उसे उतार दें? इसलिए कि सोचने और करने के पुराने तरीके हम से चिपके रहना माँगते हैं और हमें उनसे निपटना चाहिए।

४:२३ रोमि १२:२ - इसके कारण हमारे जीवन में बदलाव आएगा।

४:२४ ***"नई इन्सानियत"*** - यह मसीह में रहने का नया तरीका है। पृथ्वी पर रहते हुए उसने दिखाया कि कैसे बर्ताव करें। यीशु ने ही हमारे भीतर नए आत्मिक स्वभाव को पैदा किया, जिससे हम पवित्र और खरा जीवन बिताएँ (२:५,१०; रोमि ८:४)।

"पहन लो"- कुलु ३:१०; रोमि १३:१४; १यूहन्ना २:६"पहन लो" यह बाहरी रहन-सहन को दिखाता है। एक विश्वासी के व्यवहार का तालमेल इस से होना चाहिए कि वह मसीह में क्या है। वह नयी रचना है (१कुरि ५:१७)। ऐसा ही उसका व्यवहार होना चाहिए। कपटी लोग जो कुछ बाहर दिखते हैं, भीतर नहीं होते हैं। विश्वासियों के पास कुछ आत्मिक, वास्तविक और अद्भुत भीतरी बात है। ज़रूरी यह है कि बाहर यह सब दिखे।

"सृजनहार के द्वारा बनाया गया" -२कुरि ५:१७ जिस तरह से विश्वासियों में नया स्वभाव पवित्र और खरा है, उसी प्रकार पहले अपवित्र और दुष्ट स्वभाव पहले था।

४:२५-३२ 'उतार देने', 'पहन लेने' का मतलब क्या है,इसे पौलुस स्पष्ट करता है। विश्वासियों की जो बातें पवित्रता और भलाई के खिलाफ हैं, उन्हें अस्वीकार करना चाहिए, करना रोक देना चाहिए।

४:२५ पद १५। सच्चाई से हम मज़बूत होते हैं। झूठापन बर्बाद करता है। जब मसीही यहाँ असफल होते हैं, तो एक दूसरे के साथ तथा सच्चाई के परमेश्वर के साथ समस्या बनी रहेगी (भजन ३१:५)। झूठ और धोखा देना परमेश्वर और लोगों के खिलाफ अपराध है।

४:२६ भजन ४:४; मत्ती ५:२२ पद ३१ में जिन बुराईयों के विषय में है, वे क्रोध का नतीजा हो सकती हैं। जैसे ही ये हमारे भीतर उठें हम इनका मुकाबला करें।

४:२७ झूठ (असत्य) और गुस्सा दो ऐसी चीजें है, जिनसे मसीही शैतान को मौका देते है कि वह उनके जीवन में उत्पात मचाए। शैतान इसी की तलाश में भी रहता है। २ कुरि २:११; १ पत ५:८।

४:२८ ***"आगे से चोरी न करे"***-जो धन हमें दिया जाता है उसका नाजायज इस्तेमाल या उसमें से लेकर इस्तेमाल करना और न लौटाना यह सभी चोरी है। अपने फायदे के लिए झूठा हिसाब-किताब रखना भी चोरी है। यूहन्ना १२:६ से मिलान करें। कुछ लोगों के लिए यह भयंकर परीक्षा है। यह सब देखकर रोना आता है। क्या मसीह को भी रोना नहीं आता होगा ? यदि किसी ने ऐसा किया है, आगे को न करे। दूसरे का जो लिया है लौटा दे। क्या परमेश्वर का हमें देखकर मुस्कराना और उनके साथ सहभागिता

२६ मेहनत करनी चाहिए, ताकि ज़रूरतमंद लोगों को देने के लिए उसके पास कुछ हो । **तुम्हारे** मुँह से कोई गंदी बात
न निकले, लेकिन वही जो अच्छी है और तरक्की के लिए फायदेमंद है । ऐसी बात जो सुनने वालों के जीवन में
३० भलाई (अनुग्रह) लाए । **तुम** स्वर्गिक पिता के आत्मा को दुख न पहुँचाओ, क्योंकि उन्हीं के द्वारा तुम पर छुड़ाए जाने
३१ वाले दिन के लिए मोहर की गयी है । **सारी** कड़वाहट, तैश में आना, क्रोध, झगड़ा, बुरा बोलना और चोट पहुँचानेवाली
३२ बातें तुमसे दूर ही रहें। **बल्कि** तुम करूणामय और एक दूसरे को माफ करनेवाले बनो, जैसा स्वर्गिक पिता ने मसीह के कारण
५,२ तुम्हें माफ किया है ।**इसलिये** प्यारे बच्चों की तरह, स्वर्गिक पिता की बात माननेवाले बनो । जिस तरह से मसीह ने हमसे
मोहब्बत की और खुद को खुशबुदार इत्र की तरह सृष्टिकर्ता के लिए एक भेंट और बलिदान के रूप में चढ़ा दिया, उसी
३ तरह प्यार-मोहब्बत का जीवन जीयो । जैसा कि पवित्र लोगों के लिए उचित है, तुम्हारे बीच यौन अनैतिकता, सभी
४ तरह की अशुध्दता या लालच जैसी बातें सुनने में भी न आएँ ।**और** तुम्हारे बीच गंदी और बेवकूफ़ी की बातें, भद्दा
५ मज़ाक जो उचित नहीं है, न हों, बल्कि धन्यवाद दिया जाना हो, **पर** तुम यह जानते हो कि यौन पाप में लिप्त व्यक्ति,
अशुध्द व्यक्ति और लालची इन्सान की (क्योंकि ऐसे लोग मूर्तिपूजक हैं), मसीह और सृष्टिकर्ता के राज्य में कोई
६ हिस्सेदारी नहीं है । **कोई** व्यक्ति तुम्हें खोखली बातों से धोखा न दे, क्योंकि इसी कारणवश यहोवा परमेश्वर की सज़ा

अनुचित पैसे से बढ़कर नहीं है ?

"मेहनत करनी चाहिये....देने के लिए उसके पास कुछ हो" -२ थिस्स ३:६-१० । ईमानदारी से कमाया हुआ धन और दूसरों के साथ मिल बाँटकर इस्तेमाल से स्वर्गिक पिता को आदर सम्मान ।

४:२६ ***"गंदी बात"*** -५:४, कुलु ३:८; मत्ती १२:३६। यदि मसीह हमारे अन्दर हैं, तो हम गंदी भाषा का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?

"तरक्की के लिये फायदेमंद" - हम जो कुछ कहते हैं, हमारा यही उद्देश्य होना चाहिए (पद १२,१५,१६) ।

४:३० ***"दुख न पहुँचाओ"*** पवित्रआत्मा एक नहीं है, मससूस न करनेवाला अचेतन प्रभाव नहीं है (देखें यूहन्ना १४:१६,१७) । विश्वासी उन्हें दुखित कैसे करते हैं - झूठ से, गुस्से से, चोरी से, स्वार्थ से, बुरा कहने से आदि ।जो बेकार की बात परमेश्वर के लोगों को दुखित करती है, पवित्रात्मा को भी दुखित करती है ।

"मोहर की गई" - १:१३,१४ यदि विश्वासी पवित्रात्मा को शोकित करें, तौभी वह उन्हें छोड़कर नहीं चला जाता । लेकिन उनके भीतर काफी पीड़ा होगी ।

४:३१ दूसरी जो दुष्टता की बातें परमेश्वर के आत्मा को पीड़ित करती है, हमें अलग कर देनी चाहिए - उन्हें हमारे जीवन में रहने का कोई हक्क नहीं है ।

४:३२ पद २; रोमि १२:१०,१७,१९; कुलु ३:१२,१३ । परमेश्वर ने विश्वासियों को पूरी तरह से और मुफ्त में माफ किया है । इसलिए विश्वासियों को चाहिए कि वे उन सब को माफ करें जो उन्हें दुख पहुँचाते है । अगर वे ऐसा नहीं करेंगो तो वे परमेश्वर के साथ समस्या में पड़ जाएंगे । मत्ती ६:१२,१४,१५; १८:२१-३५ । अगर हम उन्हें माफ नहीं करना चाहेंगे, जो हमें पीड़ा देते हैं, तो हम अपना नुक्सान करते हैं; मसीह का दिल दुखाते हैं और मण्डली में समस्या पैदा करते हैं ।

५:१ मत्ती ५:४८ । परमेश्वर के बच्चों को अपने पिता की तरह बर्ताव करना चाहिए ।

"प्यारे बच्चों"- १ यूहन्ना ३:१ ।

५:२ ***"प्यार मोहब्बत से जीवन जीयो"*** -३:१६,४:१५, यूहन्ना १३:३४; रोमि १२:१०; गल ५:६,१३;१यूहन्ना ३:११,१६-१८; ४:७,८ । २:१० में नोट्स देखें ।

"मसीह ने हमसे मोहब्बत की"- पद २५, यूहन्ना १३:१; १५:६,१२, रोमि ८:३७; गल २:२० ।

"भेंट..खुशबुदार इत्र"-मत्ती २०:२८;२६:२८; यूहन्ना १:२६; रोमि ३:२५;५:८;२ कुरि ५:१४;इब्रा ६:१४; १०:१०,१४; १पत २:२४, ३:१८ । खुशबु शब्द ओल्ड टैस्टामॅन्ट के बलिदानों की याद दिलाते हैं, जो कि मसीह के प्रतीक है (लैव्य १:६,१३,१७) ।

५:३ ४:१; १ कुरि ६:१३-१८; १ पत १:१४,१५;१यूहन्ना २:६ ।

"लालच" -पद ५; लूका १२:१५-२१; १ तिमो ६:६-१०; इब्रा १३:५; २ पत १:४ ।

५:४ ४:२६, कुलु ३:८; ***"धन्यवाद दिया जाना"*** - पद २० । कुलु ३:१७; फिलि ४:६; १ थिस्स ५:१८; इब्रा १३:१५; भजन ५०:१४; ११३:१; लैव्य ७:१२,१३ ।

५:५ १ कुरि ६:९-११; गल ५:२१; इब्रा १०:२६,२७; १ यूहन्ना ३:६,१० ।

"मूर्तिपूजक" -लालची व्यक्ति को मूरत पूजनेवाला कहा गया है क्योंकि जिन बातों पर उसका मन लग गया है, उसकी पूजा ही कर रहा है । उसके भीतर उसकी मूर्ति है । यहे १४:३,४ ।

"राज्य"-मत्ती ४:१७; रोमि १४:१७; कुलु १:१३ देखें । इस संसार में दो साथ-साथ राज्य हैं । एक लूसीफर (शैतान का) दूसरा यीशु का । हमारे विचार से जो इन्सान से ५:५में बतायी बातों में फँसा हुआ है, संसार में यीशु के राज्य के फ़ायदे नहीं उठा सकता।

५:६ ***"कोई व्यक्ति तुम्हें खोखली बातों से धोखा न दे"*** -१ कुरि ६:६; गल ६:७; १यूहन्ना ३:७,८ । कुछ लोग यह दावा करते हैं कि जैसी मर्ज़ी हो दुष्टता में लगे रहें, फिर भी दुनियाँ में और भविष्य में स्वर्गिक पिता के राज्य का आनन्द उठाएँ, ऐसे लोग धोखे

७,८ आज्ञा न माननेवालों पर आती है । **इसलिए** ऐसे लोगों के साथ हिस्सेदार न बनो । **क्योंकि** एक समय था, जब तुम
९ अंधियारे में थे, लेकिन अब यीशु में उजाला हो । इसलिये उजाले की सन्तान की तरह जीवन जीयो । **इसलिए**
१० कि रोशनी का असर सब तरह की अच्छाई, धार्मिकता और सच्चाई में है । **यह** मालूम करते हुए कि यीशु को क्या
११ भाता है, **अंधियारे** के बे-फल कामों के साथ किसी तरह की साझेदारी मत रखना, लेकिन उन्हें सबके सामने प्रगट
१२,१३ करना । **क्योंकि** उन बातों के विषय में जिन्हें वे छिप कर करते हैं, मुँह से कहने में भी शर्म आती है । **लेकिन** वे
सभी बातें जिनका खुलासा किया जाता है, रोशनी के द्वारा दिखायी देती हैं । इसलिए कि जो भेद खोलनेवाली है,
१४ वह रोशनी ही है । **इसलिए** लिखा है, "तुम जो सो रहे हो, जाग जाओ और मरे हुओं में से जी उठो, और यीशु
१५ तुम्हें रोशनी देंगे" **इसलिए** गौर से देखो कि तुम बेवकूफों की तरह नहीं, लेकिन अकलमन्दों की तरह चलते हो,
१६,१७ **समय** की कीमत जानो, क्योंकि दिन बुरे हैं । **इसलिए** नादान मत बनो, बुद्धिमानी से समझो, कि यीशु की इच्छा क्या है ।
१८,१९ **नशे** से दूर रहो, क्योंकि इससे ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है, लेकिन पवित्र आत्मा से भरपूर होते जाओ । **आपस** में

और भूल में हैं ।

"परमेश्वर की सज़ा" - गिनती २३:५; व्यवस्था ४:२५; भजन ९०:७-११; यूहन्ना ३:३६; रोमि १:१८ आदि देखें । अगर मुक्ति पाए हुए लोग ऐसे कामों में लगे रहेंगे, तो वे अपनी ज़िन्दगी को शैतान के लिए खोलेंगे जो आकर उन्हें पीड़ित करेगा । परमेश्वर की सज़ा का मतलब यही लगता है । सच्चाई तो यह है कि ऐसे सभी कामों में लगे रहनेवाले व्यक्ति ने शायद कभी भी नया जन्म पाया ही नहीं था । फिर भी वह अपनी मुक्ति या यीशु होने का दावा कर सकता है ।

५:७ २ कुरि ६:१४ - १८ आदि ।

५:८ दुष्ट और अविश्वासी न ही केवल आत्मिक अंधेरे में हैं, वे खुद अंधेरा हैं । इसी तरह विश्वासी न सिर्फ उजियाले में हैं, वे खुद प्रकाश हैं (मत्ती ५:१४-१६) । उनके पास यह एक मौका और ज़िम्मेदारी है कि अपने पद के मुताबिक करें । सृष्टिकर्ता रोशनी हैं (१ यूहन्ना १:५) इसलिए उसके बच्चे रौशनी के बच्चे हैं । उसी के जो पूरी तरह पवित्र और शुद्ध हैं । इसलिए उन्हें पूरी तरह से पवित्र रहने का अभ्यास डालना चाहिए।

५:९ ***"असर"*** - मत्ती ७:१७-२०; यूहन्ना १५:१-८; रोमि ७:४ ।

"अच्छाई" - गल ५:२२ ।

"धार्मिकता"-४:२४; मत्ती ५:६;रोमि ६:१८, ८:४; १४:१७,१८;२कुरि ५:२१;फिलि १:११; १तिमो६:११;१ पत२:२४; भजन १५:१,२ ।

"सच्चाई" -४:१५,२१,२५ ।

५:१० रोमि १२:२; २ कुरि ५:९ यीशु के जन का ख्याल यह होना चाहिए कि वह करे जो उन्हें पसन्द है ।

५:१४ यह बाइबल के पहले भाग में से नहीं है, लेकिन वहाँ के पद जैसे यशा ६०:१; मलाकी ४:२ में से है । ये शब्द पुराने मसीही गीत के हो सकते हैं ।

"मरे हुओं में से जी उठो"-जो लोग अंधेरे और दुष्टता में रह रहे हैं, आत्मिक रीति से सो रहे हैं, और मरे हैं । उन्हें जी उठने और मसीह के पास आने की जरूरत है।

५:१५ "चलते" या "जीते" २:१ के नोट्स पढ़ें । मसीह के लोगों को ऐसे जीना चाहिए कि स्वर्गिक पिता की रोशनी उनमें से निकलकर अंधेरे में जाएगी जहाँ लोग दुष्टता में सो रहे हैं और मरे हुए हैं ।

"अकलमंदों" - कुलु ४:५; मत्ती १०:१६ । विश्वासियों को यह ज्ञान चाहिए कि दुष्ट दुनिया में कैसे रहें ।
हमें यह मिल सकता है (याकूब १:५,६) ।

५:१६ इस दुनिया में हमारी रोशनी चमके इसके लिए हमें मौके ढूँढने चाहिए ।

"दिन बुरे हैं" - गल १:४; फिलि २:१३; २ तिमो ३:१ ।

५:१७ ***"समझो"*** - १:१८;४:१८;कुलु १:९; २:२; रोमि १२:१,२ ।

५:१८ ***"नशे"*** - रोमि १३:१३; १ कुरि ५:११,६:१०; गला ५:२१; यश ५:११,२२; उत्पत्ति ९:२१ । ***"पवित्र आत्मा"*** का मतलब परमेश्वर की आत्मा (१:१३,१४; २:१८,२२; ३:१६) ।

"पवित्र आत्मा से भरपूर होते जाओ" -यह स्वर्गिक पिता की मर्जी हर एक के लिए है । हमारे लिए उनकी जो इच्छा नहीं है वह हमसे नहीं चाहेंगे । विश्वासियों के लिए उसकी बिनती ३:१६ में भी है । क्योंकि यह परमेश्वर की मर्ज़ी है हम इसे हासिल कर सकते हैं । (१ यूहन्ना ५:१४,१५; लूका ११:१३) । इसे हम स्वर्गिक पिता के पास सीधे जाकर बिना किसी मनुष्य की सहायता से ले सकते है । प्रेरित १:५;२:४,३९ के नोट्स देखें ।

"भरपूर होते जाओ" - निरन्तर पाना और उसमें बने रहना । यह सामान्य बात है । निरन्तर भरते रहने का मतलब है बात मानना, आधीन होना और भरोसा । शराब पीनेवाला उसके असर में रहता है । पवित्र आत्मा से भरा, पवित्र आत्मा के असर में वह अपने आपे में रहता है । (१कुरि १४:३२,३३) । आत्मा का फल संयम है (गल ५:२३) । आत्मा के प्रति जानबूझकर खुशी से आधीन होना है ।

५:१९-२१ पवित्रआत्मा की भरपूरी का चिन्ह क्या है ? यहाँ वह चिन्ह, अद्भुत काम या आत्मा के वरदान की बात नहीं करता है । लोगों को फर्क-फर्क वरदान मिले हुए हैं । (रोमि १२:४-८; १ कुरि १२:७-११,२८-३०)। यह हो सकता है कि एक या तमाम वरदान

२० एक दूसरे से और मन में यीशु के लिए भजन, गीत और आत्मिक गीत, गाते और गुनगुनाते रहो । **हमारे** स्वामी यीशु मसीह
२१ के नाम में स्वर्गिक पिता को हमेशा सब बातों में धन्यवाद देते रहो । **और** यहोवा परमेश्वर के भय में एक दूसरे
२२,२३ के आधीन होते जाओ । **पत्नियो** अपने पतियों की अधीनता में ऐसे रहो, जैसे यीशु मसीह के । **क्योंकि** पति भी
२४ पत्नी का प्रधान है, जिस तरह से मसीह, मण्डली (देह) के प्रधान हैं, इसी देह के वह बचानेवाले हैं । **लेकिन** जिस
तरह से मण्डली मसीह की आधीनता स्वीकार करती है, पत्नियों को भी सभी बातों में अपने पति की माननी चाहिए।
२५ पतियों, अपनी पत्नियों से प्यार करो, जिस तरह से मसीह ने मण्डली से प्यार किया और अपने आप को उसके लिए दे
२६,२७ दिया, **ताकि** वह उसे वचन के पानी से धोकर शुध्द करे । **और** मसीह अपने आप के लिए एक तेज से भरी मण्डली
२८ तयार करें, जिसमें दाग या झुर्रियाँ न हों, लेकिन पवित्र और निष्कलंक ठहरे । **इसलिए** पतियों को अपनी पत्नियों

तो हैं लेकिन आत्मा की भरपूरी के बगैर (१ कुरि १:७; ३:१,३)। आत्मा से भर जाना संभव है, और उन वरदानों को न पाना भी जिनके विषय कुछ मसीही लोग बढ़ा-बढ़ा कर कहते है (प्रेरितों २:४,११; १ कुरि १२:१०,२८:३०)

पौलुस यहाँ उन बातों के बारे में बतलाता है जो आत्मा की भरपूरी को दिखाती हैं - दूसरे विश्वासियों के साथ खुशी की संगति, परमेश्वर को धन्यवाद देना और एक दूसरे की सुनना । आत्मा का फल (गल ५:२२) उनमें अधिक बढ़ता है जो लगातार आत्मा से भरे रहते हैं ।

५:१६ संगीत और गीत गाना आत्मा से भरे मन से ही होता है ।

५:२० यहाँ शब्द ***"हमेशा"*** और ***"सब बातों में"*** पर गौर करें । देखें २ कुरि ४:१५; कुलु २:७,४:२; १ थिस्स ५:१८, १ तिमो २:१; इब्रा १३:१५, लैव्य ७:१२,१३; भजन ७:१७। ऐसा विश्वासी रोमि ८:२८ की वजह से कर सकते हैं, अगर वे आत्मा से भरे होते हैं ।

५:२१ ***"अधीन"*** -पद २२,२४,६:१,५,१ कुरि १६:१६; इब्रा १३:१७; १ पत ५:५ । आधीनता का मतलब है आज्ञा मानना । यह अपनी मर्जी के खिलाफ जाना है । अपने घमण्डीपन के उल्टा है ।

"भय" -उत्पत्ति २०:११, भजन ३४:११-१४; १११:१०; नीति १:७ देखें ।

५:२२-२१ ***"जैसे यीशु मसीह के"*** -इसका मतलब यह नहीं है कि जिस तरह से यीशु उनके लिए हैं, पति भी हैं। उन्हें मसीह और पति दोनों की बात माननी है । पति के प्रति आज्ञाकारिता है, यीशु के लिये उनकी आज्ञाकारिता है । जैसा उन दिनों था वैसा आज भी होना चाहिए । तुलना करें कुलु. ३:१८ से और देखें २ तिमो. २:११-१३; १ पत ३:१,२,५,६ । जो पत्नियाँ ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, वे परमेश्वरीय तौर तरीके का विरोध कर रही हैं । इससे उनकी ज़िन्दगी में दुःख आएगा ।

५:२३ ***"पत्नी का प्रधान"*** -इसका मतलब यह नहीं कि स्त्रियाँ पुरूष से कम है । इसका मतलब है, कि परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से घर और समाज में एक ढाँचा रखा है । वह चाहते हैं, कि सभी उस को माने । देखें १ कुरि ११:३-१६ और नोट्स ।

"बचानेवाले"- मसीह मण्डली के छुड़ानेवाले और बचानेवाले हैं ।

"देह"- पद ३०; १:२२,२३ ।

५:२४ ***"सभी बातों में"***- पौलुस ऐसी हालत की बात कर रहा है, जहाँ पति-पत्नी विश्वासी हैं और दोनों ही यीशु के लिए जवाबदार हैं । अगर पति चाहता है कि पत्नी वचन के खिलाफ काम करे तो बात नहीं माननी चाहिए । वचन में यह सिद्धान्त प्रेरित ४:१९; ५:२९; रोमि १४:२३ में है ।

५:२५ ***"प्यार"*** - पत्नियों का काम है आज्ञा मानना पति का है प्यार करना (इसका मतलब यह नहीं कि पत्नी पति से प्यार न करे या पति पत्नी की इच्छाओं को पूरा न करें ।) पौलुस ऐसे प्यार की बात करता है, जो दिखता है । पति का प्रेम पत्नी के प्रति बर्ताव में दिखता है । जो पति यहाँ नाकामयाब होते हैं, वे परिवार की तमाम कठिनाईयों और उदासी का कारण बनते हैं ।

"जिस तरह से मसीह ने" - यूहन्ना १३:३४ से मिलान करें ।

"दिया" -पद २; गला २:२०; रोमि ५:८; यूहन्ना १०:११,१५ ।

५:२६,२७ देखें कि मसीह मण्डली के लिए क्यों मरे; तुलना करें १:४; तीतुस २:१४; १ कुरि ६:११ । वह पूरी तरह से पवित्र हैं और तब तक सन्तुष्ट नहीं होंगे जब तक उनकी मण्डली पूरी तरह से पवित्र नहीं है । पद २७ तब पूरा होगा, जब मण्डली यीशु के दोबारा आने पर आकाश मण्डल में मिलेगी (१ कुरि १५:५०-५७) ।

"वचन के पानी से धोकर"- कुछ विद्वान इसे पानी का बपतिस्मा समझते हैं । लेकिन हम सभी जानते हैं कि वचन से और परमेश्वर के आत्मा से भीतर शुद्धता ज़रूरी है; मात्र शुद्धता पर देखें भजन ५१:२,७; यहेज ३६:२५,२६; ३७:२३; यूहन्ना १३:५,१०; १५:३; तीतुस ३:५ (यूहन्ना ३:३-८); इब्रा ६:१४; १ यूहन्ना १:७,९ ।

५:२८,२९ उसका मतलब यह है कि पति और पत्नी एक देह हैं (पद ३१) । इसलिए कि उसकी पत्नी की देह उसकी देह है, उसे चाहिए कि वह पत्नी की देह से ऐसा प्यार करे जैसे खुद की देह से कर रहा हो ।

"प्यार करता है" - इसका अर्थ है, वह प्यार, जिससे प्रेरित होकर वह उसके साथ व्यवहार करता है (पद २५) । वह प्यार जो काम में दिखता नहीं है, मसीही प्यार नहीं है - १ यूहन्ना ३:१८ । स्वर्ग पर रहकर यीशु प्यार का संदेश नहीं दे रहे थे । वह

से इस तरह प्यार करना चाहिए, जैसे वे अपनी देह से करते हैं । जो अपनी पत्नी से प्यार करता है, वह खुद से
२९ प्यार करता है । **कभी** भी किसी व्यक्ति ने अपनी देह से नफ़रत नहीं की, लेकिन वह उसकी देखभाल करता है,
३०,३१ जैसे यीशु मण्डली के साथ करते हैं । **क्योंकि** हम उनकी देह, मांस और हड्डी के भाग हैं । **इसलिए** एक पुरूष अपने
३२ पिता और माता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से जोड़ा जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जायेंगे ।**यह** एक बड़ा
रहस्य है, लेकिन मैं तो मसीह और मण्डली के बारे में कह रहा हूँ । **फिर** भी तुममें से हर एक व्यक्ति अपनी पत्नी
६ से ऐसा प्रेम रखे, जैसा वह खुद अपने आप से रखता है; पत्नी को भी अपने पति की इज्ज़त करनी चाहिए । **बच्चों**,
२ यीशु में, अपनी माताजी और अपने पिताजी का कहना मानो, क्योंकि ऐसा करना सही है । **"अपने** पिता और माता
३ का आदर करना", ऐसी पहली आज्ञा है, जिसके साथ एक वायदा जुड़ा हुआ है । **वह** वायदा यह "कि तुम्हारा भला
४ हो और इस दुनिया में तुम लम्बे समय तक जीवित रहो"। **बच्चेवालो**, अपने बच्चों को गुस्सा करने के लिए मत उकसाओ,
५ लेकिन यीशु की सहायता से पालन-पोषण और डाँट-डपट करो । **हे** नौकरो, डरते -काँपते और मन की सच्चाई से
६ अपने मालिक की आज्ञा का पालन इस तरह करो, जैसे कि यीशु के सेवक हो। **तुम** दिखाने या लोगों को खुश करने

इस पृथ्वी पर आए और अपने आप को दे दिया (पद २५) वह अभी मण्डली की देखभाल करते हैं ।

५:३० १:२३; २:१६; ३:६; ४:४; १२,१६; रोमि १२:४,५; १कुरि १२:१२,१३,२७ ।

५:३१ उत्पत्ति २:२४ ।

५:३२ इसी कारणवश एक व्यक्ति अपने माता-पिता, भाइयों बहनों को और जो कुछ भी उसके पास है, छोड़ेगा और मसीह के साथ एक किया जाएगा । दो जन "एक" हो जाएँगे (१कुरि ६:१७; मत्ती ४:१८-२२; १०:३७-३९; लूका १४:२६,२७,३३) । पौलुस पति को मसीह की तस्वीर के रूप में और पत्नी को कलीसिया (मण्डली) के रूप में देखता है । तुलना कीजिए २ कुरि ११:२; यूहन्ना ३:२८,२९; प्रका १९:७ ।

५:३३ क्या यह कहने की ज़रूरत है कि एक पति इस तरह से जीए कि उसकी पत्नी उसे इज्ज़त दे ? या पत्नी इस तरह से रहे कि पति के प्यार को पाए ? इस पद में यूनानी शब्द "इ़ज्जत" पद २१ में इसी मूल शब्द से लिया गया है ।

६:१ यहाँ पौलुस अभी भी यीशु को अपनाने वालों से बात कर रहा है । बच्चों से यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वे माता-पिता की बात तब माने जब उन्हें परमेश्वर के वचन के खिलाफ करने के लिए कहा जाता है । लेकिन उन सभी दूसरी बातों में उन्हें आज्ञा माननी ही चाहिए । माता-पिता की बात को न मानना विद्रोही और गंदे स्वभाव को दिखाता है । जो बच्चा ऐसा करता है वह परमेश्वर के प्रति भी यही करेगा । रोमि १:३० ।

६:२,३ निर्गमन २०:१२; व्यव ५:१६ । विश्वासियों को नियमशास्त्र का पालन नहीं करना है (रोमि ६:१४,१५; ७:४, गल ३:२५) । लेकिन खरा जीवन उनमें होना चाहिए (रोमि ८:४) माता-पिता के लिए आज्ञा 'सही' है (पद १) अगर मसीही बच्चे अपने माता-पिता की नहीं मानते, तो उन्हें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि इस पृथ्वी पर उनका भला होगा, और लम्बी आयु मिलेगी ।

६:४ बच्चों के साथ बेइन्साफी और कठोरता या बिना सोचे विचारे कहना उन्हें गुस्सा दिलाएगा । अनुशासन बहुत ज़रूरी है ।(नीति १३:२४; १९:१८; २२:१५; २२:१३,१४; इब्रा १२:७,८) । लेकिन यह अनुशासन (२२:१२,१४; इब्रा १२:७,८) प्यार से किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे समझें कि बच्चों को माता-पिता के सुपुर्द स्वर्गिक पिता ने किया है । वे परमेश्वर के हैं (यहेज १८:४) । परमेश्वर ने माता को यह ज़िम्मेदारी और मौका दिया है, कि वे उन्हें सिखाएं और संभाले । अपने कामों और शब्दों से उन्हें बच्चों की मदद करनी चाहिए, ताकि वे वही बनें जो वह चाहते हैं ।(व्यवस्था ६:६,७; भजन ३४:११; ७८:४-८) । अगर माता-पिता अपनी इस ज़िम्मेदारी को हल्का-फुल्का समझेंगे, उन्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, जब बच्चे गुमराह हों और पीड़ा पहुँचाएं ।

६:५ ***"गुलाम"*** या ***"नौकर"*** यूनानी भाषा में शब्द इन दोनों के लिए एक ही है । पौलुस यहाँ उन सभी के बारे में कह रहा है जो किसी के हाथ के नीचे हैं न कि तनख्वाह पाने वाले नौकर । पुराने समय में गुलामी आम बात थी । पशुओं की तरह बाज़ार में इन्सान को लाया और बेचा जाता था । इनमें से बहुत से युद्ध में बनाए गए बन्दी थे या उनकी सन्तान । कुछ शहरों में लोगों से ज़्यादा गुलाम हुआ करते थे । ऐसे बहुत से गुलाम यीशु को मानने लगे थे । उन्हें अब क्या करना चाहिए? बलवा करके क्या उन्हें भाग जाना चाहिए? बाईबिल यह नहीं सिखाती । (१ कुरि ७:२०-२४ । कुलु ३:२२; ४:१; १ तिमो ६:१,२; तीतुस २:९,१९; १ पत २:१८-२५ भी देखें) ।

बाईबल का यह कहना नहीं है कि गुलामी अच्छी है । यह सिर्फ यह दिखाती है कि उस स्थिति में भी दास और गुलाम की ज़िम्मेदारियाँ क्या थीं । यह इसी बात को दिखाता है । यीशु के लोगों ने यह जाना, कि यह रीति प्यार के जीवन के खिलाफ है (रोमि १२:१०; १३:८-१० आदि) । जहाँ संभव था वे गुलामी को खत्म भी कर सके । जहाँ यीशु की शिक्षा को अपनाया जाता है वहाँ, गुलामी बनी नहीं रह सकती । गुलामी पर और जानकारी के लिए निर्ग २१:३ पर नोट्स देखें ।

६:६-८ पौलुस कहता है कि अपनी आज़ादी से बढ़कर और भी मुद्दे हैं । मसीह की मानना, सृजनहार की इच्छा का पूरा करना, गुनाह की गुलामी से आज़ाद होना, जिस परिस्थिति में हैं उसके लिए सही रवैया होना यह सबसे ज़रूरी बातें हैं चाहे कोई गुलाम हो या गुलाम रखने वाला ।

"मसीह के गुलाम" - रोमि ६:१६ - १८:२२; १ कुरि ६:१९ ।

७ के लिए सेवा मत करो, लेकिन मसीह के गुलाम के तरह, **दिल** से स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करने के लिए सेवा करो ।
८ **यह** जानते हुए कि जो व्यक्ति भला करता है वह चाहे नौकरी करता हो या आज़ाद तरीके से काम करनेवाला हो,
९ उसे यीशु मेहनताना/मजदूरी देंगे । **तुम** मालिको, अपने नौकरों को धमकी मत दो । उनके साथ भला व्यवहार करो।
१० यह जान लो कि तुम्हारे मालिक (यहोवा) स्वर्ग में हैं और वे किसी का पक्षपात नहीं करते हैं । **अन्त** में, मेरे भाइयो
११ यीशु में और उनकी शक्ति के प्रभाव से मज़बूत होते जाओ । **स्वर्गिक** पिता के सभी हथियारों को पहन लो, ताकि
१२ तुम शैतान की बुरी चालों के सामने खड़े रह सको । **क्योंकि** हम इन्सान के विरोध में नहीं परन्तु आकाशमण्डल
१३ में संसार के अन्धकार के राजकुमारों और आत्मिक दुष्टता के विरोध में सघर्ष कर रहे हैं । **इसलिए** तुम दुख यहोवा

"मेहनताना" - मत्ती ५:१२; १०:४१-४२; १६:२७; १ कुरि ३:८,१४; इब्रा. १०:३५; प्रका ११:१८; २२:१२ ।

६:९ ईमान रखनेवाले गुलाम जिस तरह से मसीह की मण्डली (देह) के अंग थे, उतना ही उनके रखने वाले विश्वासी मालिक । उन दोनों का ही सिर (प्रधान) यीशु हैं, जो सबके मालिक हैं । इसलिए मालिकों को चाहिए कि यह जानते हुए बर्ताव करें । यही बात वहाँ लागू होती है जहाँ मालिक और नौकर का सवाल है ।

"पक्षपात नही करते" - रोमि. २:११; कुलु ३:२५; १ पत १:१७ । हमने क्या किया, कहा है, रवैया क्या है, इस आधार पर हमारा इंसाफ होगा, न कि समाज में हमारी जगह क्या है ।

६:१० ***"यीशु में मजबूत*** - १:१९-२१; ३:१६; १ कुरि १६:१३; २ कुरि १२:१०; फिलि ४:१३; कुलु १:२९; १ तिमो १:१२; २ तिमो २:१; इब्रा ११:३४; यहोशू १:६,७,९,१८; भजन १८:३२-३६; यशा ४०:३०,३१, रोमि ८:३७। विश्वासी युद्ध क्षेत्र में हैं । वे सैनिक हैं (१ तिमो ६:११; २ तिमो २:३,४; ४:७) । उन्हें तैयारी के साथ युद्ध करके जीत हासिल करनी चाहिए । उनकी अपनी ताकत और इच्छा शक्ति इसके लिए काफी नही है । उन्हें पिता की शक्ति चाहिए । उन्हें चाहिए कि यीशु पर दृष्टि डालें, भरोसा रखें (१ यूहन्ना ५:१४,१५) हमें बाईबल को नज़रअदाज नहीं करना हैं । पूरी बाईबल इसलिये है कि हम युद्ध के लिये मज़बूत बनें ।

६:११ ***"सभी हथियारों"*** - पौलुस ने बड़ी आशीषों के बारे में बताया था (१:३) बड़ी मुक्ति के बारे में (१:१३,१४) बड़ी समझ, बड़ी शक्ति, बड़ा प्यार (१:१८,१९; ३:१७-१९) हमें यह नहीं समझना चाहिए कि मसीही जीवन बड़ा आसान होगा । हमें इस बात से हक्का बक्का नहीं हो जाना चाहिए कि उसका हमला हम पर होता है । यदि ऐसा नहीं होता है तो आश्चर्य करना चाहिए (१पत ५:८) । यहाँ पौलुस एक रूपक का इस्तेमाल करता है । वह उन दिनों में युद्ध में रोमी सिपाहियों के लड़ने का है। अधूरे हथियार का मतलब अधूरी सफलता नहीं है । अधूरे हथियार से कोई सफलता नहीं मिलती है । इससे तो वे खतरे के हालत में रहेंगे । मसीह में हम विश्वासियों के लिए परमेश्वर ने आत्मिक हथियारों का इन्तज़ाम किया है ।

हमें यह समझना चाहिए कि यह हथियार कौन से हैं । हमें इनको पहनना भी चाहिए । न हो कि हम मुक्ति का टोप तो पहन लें और छाती के लिए धार्मिता की झिलम न पहनें । अगर हम पूरे हथियार न पहनें तो शैतान के तीरों के खिलाफ खड़े नहीं रह पाएंगे । अगर हम गिर जाएँ तो निश्चित रहें कि शैतान हमसे लढ़के तमाम ज़ख्म देना चाहेगा । मत्ती ४:१-१०; यूहन्ना ८:४४ में शैतान पर नोट्स देखें ।

"बुरी चालों" - २ कुरि २:११ विश्वासियों का एक चालाक शत्रु है, जो चाहता है कि उनको गिराने के लिए, हराने के लिए कुछ करे ।

६:१२ शैतान विश्वासियों से लड़ने के लिए अकेला नहीं है । अनदेखे आत्मा के दायरे में (स्वर्गीय स्थानों -१:३ के नोट्स देखें) । तमाम दुष्ट आत्माएँ उसी की तरफ हैं । शैतान शासक है और इस दुनिया का "ईश्वर" भी (यूहन्ना १२:३१; २कुरि ४:४) इसके अलावा उसके साथ काम करनेवाले दूसरे भी हैं (दानि १०:१३,२०; १तिमो ४:१; प्रका १६:१४) ।ये वे दुष्टआत्माएँ (गिराए गए स्वर्गदूत)हैं, जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ बगावत की थी । ये बहुत से ईश्वर हैं जिन्हें आज पूजा जा रहा है । (१ कुरि ८:५; १०:२०; व्यवस्था ३२:१७; भजन १०६:३७ । ये "ईश्वर" लोगों को कायल करने की कोशिश करते हैं कि वे अच्छे हैं, परमेश्वर हैं या सर्वश्रेष्ठ प्रभु और दुष्टात्माओं को नाश करने वाले हैं ।)

६:१३ ***"इसलिए'*** - बिना परमेश्वर के हथियार हम दुष्ट शक्तियों, उनकी धोखे की चाल और हमें नाश करने की उनकी रणनीति के खिलाफ कैसे खड़े हो सकते हैं?

"ले लो' - यह दिखाता है कि हथियार हम इस्तेमाल कर सकते हैं । यह कहाँ हैं ? मसीह में या हमें कहना चाहिए कि यह स्वयं मसीह हैं। रोमि १३:१४ से तुलना करें । इस पद से हमें यह मदद मिलनी चाहिए कि हम जानें कि हथियार बान्धने (पहनने) का मतलब क्या है । इसका मतलब है यीशु द्वारा प्रगट किए गए सत्य का अध्ययन, समझना, विश्वास करना और अपने जीवन में लागू करना । यह पहनना पहले मन, हृदय, आत्मा और फिर बाहरी आचार-व्यवहार में है ।

"बुरे दिन" - यह पूरी पीढ़ी दुष्ट है (गल १:४) । जिन दिनों में पौलुस ने लिखा था, वे भी बुरे दिन थे (५:१६)। हर एक विश्वासी के लिए परीक्षा या प्रलोभन के ऐसे खास समय आएँगे, जब न दिखने वाली ताकतें खास कोशिश करके उसे हराना चाहेंगी । हमें नहीं मालूम ऐसा समय कब आ जाएगा । इसलिए हर दिन हमें तैयार रहना चाहिए । बिना किसी चेतावनी अकस्मात, वह हमला बोल सकता है । तुलना करें अय्यूब १:६-१९; २ शमूएल ११:२; उत्पत्ति ३:१ । हमें सतर्क रहने की ज़रूरत है (१ पत५:८) ।

१४ के सभी हथियारों को ले लो, ताकि तुम बुरे दिन में सब कुछ सामना करने के बाद स्थिर रहो । **इसलिए** सच्चाई
१५ की पेटी से अपनी कमर कसकर और धार्मिकता की झिलम पहनकर, **शांति** के शुभसंदेश को देने की तैयारी में रहो, जैसे
१६ जूतों को पहनकर तैयार रहते हैं, **उन** सबसे अधिक विश्वास की ढाल लो, जिससे तुम दुष्ट के जलते तीरों को बुझा-सको।

६:१४ ***''स्थिर रहो''***-चार पदों में यह चौथी बार है जब पौलुस इस शब्द का इस्तेमाल करता है । हम शैतान को मौका न दें कि वह हमारे ऊपर उसकी कोई चाल चले । हमें पीठ दिखाकर भागना भी नहीं चाहिए । जब दूसरे युद्ध में लगे हैं, हमें आलसी नहीं होना चाहिए । युद्ध को यीशु के हाथ में छोड़कर, हमें संघर्ष से मुँह भी नहीं चुराना चाहिए । मसीह हमारे भीतर और हमारे साथ हैं, लेकिन हमें युद्ध करना चाहिए। इस आत्मिक युद्धक्षेत्र में हम मूक दर्शक रह कर जीत की कामना नहीं कर सकते । डटे रहकर सारी दुष्ट शक्तियों से मुकाबला करना चाहिए । जीत को सामने रखकर, डट कर, बिना डरे सामना करना चाहिए । यदि ऐसा नहीं होगा तो युद्ध शुरू होने से पहले ही हम हार चुकेंगे । यहोशू १:१७ में नोट्स देखें ।

पौलुस छः हथियारों की बात करता है । देखें - पीठ के लिए कुछ भी नहीं है । जो लोग अपनी पीठ दुश्मन को दिखाते हैं, उनके लिए कोई सुरक्षा नहीं है ।

''सच्चाई की पेटी''-विश्वासी के जीवन और युद्ध में सच्चाई आधार है । यहाँ पौलुस विश्वासी के सच्चेपन और ईमानदारी की बात नहीं करता है । हालाँकि सभी विश्वासियों को सच्चा और ईमानदार होना चाहिए (४:१५,२५ आदि) । लेकिन क्या हम अपनी सच्चाई और ईमानदारी के आधार पर दुश्मन शैतान के सामने खड़े हो सकते हैं? उससे युद्ध में जीतने के लिए हमें उस सच्चाई की ज़रूरत है, जिसे परमेश्वर ने वचन में प्रगट किया है । यूहन्ना ८:३१,३२; १७:१७,१८ । यीशु जो सत्य हैं, ज़रूरी है कि हम उन्हें पहन लें (१४:६)। सच्चाई हमें शैतान के कब्जे से मुक्त करती है और जीने के लिए, युद्ध करने के लिए योग्य बनाती है ।

अपने बचाव के लिए सच्चाई का इस्तेमाल करना ज़रूरी है । पद १७ में हमला करने के लिए इसके इस्तेमाल के बारे में है । हमें सत्य के अनुसार विश्वास करना, समझना और व्यवहार करना चाहिए । नहीं तो न हम अपना बचाव कर पाएंगे न ही शैतान के साथ इस युद्ध में आक्रमण कर पाएँगे । खास बात यह है कि हम शुभसंदेश को समझें और विश्वास करें (४:२१; २ थिस्स २:१३,१४; तीतुस १:१; १ पत ५:८,६; यूहन्ना १४:६) । सच्चाई के पटुके को कसने का मतलब है, हमारे दिमागों को बाइबिल की सच्चाईयों और मसीह से भरना और तैयार रहना कि जब हमला महसूस हो तो वचन को लागू किया जा सके ।

''धार्मिकता की झिलम'' - १ थिस्सु ५:८ से तुलना करें । यहाँ पौलुस विश्वासियों की उस कोशिश के बारे में बताता है जो खरा जीवन जीने के सम्बन्ध में है । इसमें शक नहीं कि हम सभी को खरा जीवन जीना चाहिए (४:१,२२-२४) ।

क्या इसी से हम शैतान को हराने के लिए शक्तिशाली बनते हैं ? यह मसीह और जो कुछ वह हैं, उसे दिखाता है । वह हमारी धार्मिकता हैं (१ कुरि १:३०; २ कुरि ५:२१) । हम मसीह और उनकी धार्मिकता में शैतान के खिलाफ खड़े होते हैं, या बिल्कुल ऐसा नहीं करते। मसीह में विश्वासियों को परमेश्वर निर्दोष ठहरा चुके हैं । साथ ही वह हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हमें खरा बनाना चाहते हैं। शैतान के खिलाफ खड़े होने के लिए हमें इस धार्मिकता या निर्दोषता के दोनों पहलू चाहिए - एक वह धार्मिकता (निर्दोषता जो हमें स्वर्गिक पिता से मिलती है ।रोमि ३:२२-२६; ५:१; ८:१), दूसरी वह जो पवित्र आत्मा से परमेश्वर हमारे जीवन में करते हैं। रोमि ८:४ ।

धार्मिकता (निर्दोषता) की झिलम ले लेना और उसे पहने रहना, हमारे मन में निरन्तर विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता को याद रखना है । वह यह कि हमें स्वर्गिक पिता ने निर्दोष ठहराया है । और खरा जीवन जीने के लिए बुलाहट दी है । इसका मतलब है ***''नए मनुष्य''*** (४:२४) को पहन लेना । इसका मतलब है स्वर्गिक पिता के साथ सही सम्बन्ध रखना और जानना कि परमेश्वर द्वारा दी गयी सच्चाई के ऊपर हम टिके हुए हैं। इसी में यह भी आता है कि हम मुँह से अपनी स्थिति को कबूल करने के साथ हर बुराई को दूर करते जाएँ, यह जानते हुए कि हमें हर तरह की गंदगी से शुद्ध किया गया है (१ यूहन्ना १:६) । हमें यह ज्ञान और भरोसा रखना चाहिये नही तो शैतान हमें ज़ख्मी करेगा । क्या यह सच नहीं कि यदि हम अपनी धार्मिकता (भले काम, दान-पुण्य) पर भरोसा रखेंगे, तो वह बिना किसी तकलीफ के हमें गिराएगा ?

६:१५ ***''शांति के शुभसंदेश देने की तैयारी''*** - यहाँ पौलुस दूसरों को शुभसंदेश देने के लिए तैयार होने की बात नहीं कर रहा है । शैतान के ऊपर विश्वासियों की जीत का एक भाग है ''उनकी गवाही के शब्द'' । यहाँ वह कहना चाहता है कि शैतान के खिलाफ़ हमें डट कर खड़े रहना है । वह यह भी जानता था कि सिर्फ यीशु का संदेश ही हमें उसके लिए तैयार कर सकता है। हमारे आत्मिक पैर शुभ संदेश से जुड़े रहने चाहिये । दूसरों शब्दों में हमें शुभसंदेश को जानना है । भरोसा करना है, चाहना है। यह भी कि इसके कारण ही हमारा मेल स्वर्गिक पिता से हुआ है । इसे अपनी जीवन शैली में लागू करना है । यह भी मसीह को पहनना है। वह स्वयं शुभसंदेश हैं और हमारे सुलह (२:१४; ३:८) ।

६:१६ ***''विश्वास की ढाल''*** - दुष्टता करने के लिए शैतान हमारे सामने बहुत तेज परीक्षा लाता है । यह भी कि हम संघर्ष छोड़कर आराम और विलासिता ढूँढें और अपने आप के लिए जीएँ । हम कैसे यह कर सकते हैं कि हमारे दिमाग में ये तीर न चुभें, जिससे हमारी संघर्ष की क्षमता खतम न हो। विश्वास के वरदान से परमेश्वर हमें यह देते हैं । इब्रा ११ में देखें कि विश्वास क्या है और क्या करता है । १ पत ५:६ देखें। अगर हम शैतान को हराना चाहें तो, हमें मसीह के वचन पर भरोसा रखना है । हमें

१७,१८ **मुक्ति** का टोप और पवित्र आत्मा की तलवार, जो यहोवा का वचन है, ले लो । **सब** तरह की बिनतियों के साथ हर
१६ समय पवित्र लोगों के लिए सतर्कता और धीरज से प्रार्थना करते हुए, **मेरे** लिए भी प्रार्थना करो, इसलिये कि बोलने
२० का अवसर मिलने पर शुभसंदेश के रहस्य को साहस से बताने के लिए मैं अपना मुँह खोल सकूँ। **इसी** वज़ह से मैं
जंजीर में जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। प्रार्थना करो ताकि जिस तरह से हिम्मत से मुझे संदेश देना चाहिए, मैं दे सकूँ।
२१ **तुखिकुस** जो प्रिय भाई और मसीह का विश्वसनीय सेवक है, सब कुछ तुम्हें बताएगा, ताकि तुम मेरी हालत
२२ जान सको कि मैं क्या कर रहा हूँ ।**इसी** वजह से मैंने उसे तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम हमारी हालत जानो और
२३ वह तुम्हारे दिलों की हिम्मत बढ़ाए । **हमारे** भाइयों और बहनों को यीशु मसीह और स्वर्गिक पिता की ओर से शान्ति
२४ और विश्वास के साथ प्रेम प्राप्त हो । **जो** लोग सच्चाई से यीशु मसीह से प्यार करते हैं, उनके ऊपर असीम कृपा
बनी रहे ।

भरोसा रखनाहै कि वह हमारे साथ हैं । भरोसा रखें कि वह हमारे साथ हैं । वह हमें संघर्ष के लिए ताकत देंगे । हम शैतान के भेजे सभी तीर को बुझा सकेंगे । यह पौलुस का आश्वासन है और हमारा हो सकता है (रोमि ८:३१; ३७; २ कुरि २:१४; २ तिमो ४:१८) । हम विश्वास से यीशु को ओढ़ लेते हैं और सफलता से दुश्मन का मुकाबला भी कर सकते हैं ।

६:१७ ***"मुक्ति का टोप"*** -१ थिस्स ५:८; यशा ५६:१७ । टोप सिर के लिए है । परमेश्वर के आत्मिक सैनिक होने की वजह से अपने मन को मुक्ति के विचारों से भरें । हमें समझना है कि मुक्ति है क्या । यीशु खुद अपने लोगों के लिए मुक्ति हैं । हमें उन्हीं को पहनना है । (भजन १८:२,३,१७; २७:१; यर्मि ३:२३; लूका २:३०; २ कुरि १:३०; २ तिमो २:१०) ।

"आत्मा की तलवार" - तलवार का इस्तेमाल खुद को बचाने और दूसरे पर हमला करने के लिए किया जाता है । मत्ती ४:१-११ देखें कि यीशु किस तरह से इसका उपयोग करते हैं । यही काम यीशु के लोग भी कर सकते हैं । लेकिन ज़रूरी यह है कि वचन को जाने, समझें और अपनी परख के समय में इस्तेमाल करें । इसलिए बाइबल से प्यार करें, अध्ययन करें और अपने दिल दिमाग में भर लें । ४:१३,१४; कुलु ३:१६; २ तिमो २:१५; ३:१६,१७ ।

सृजनहार के वचन को आत्मा की तलवार क्यों कहा गया है ? क्योंकि उनकी आत्मा ने इसे लिखवाया, वह समझा भी सकता है (१:१७,१८; यूहन्ना १६:१३; १ कुरि २:१०-१४) ।

६:१८ यहोवा के सैनिकों के बारे में वह अपनी बात जारी रखता है । आत्मिक दुश्मन के ऊपर जीत का तरीका वह दिखा रहा हैं । वह जानता है कि बिना पिता के सहभागिता आत्मिक हार है । शैतान तब काँपता है जब वह विश्वासियों को स्वर्गिक पिता के साथ संगति करते देखता है क्योंकि बिनती करने से परमेश्वर को अपने संघर्ष में लाते हैं । वह कह रहा है कि बिना प्रार्थना हथियार हमें बचा नहीं पाएगा ।

प्रार्थना पर नोट्स देखें । उत्पत्ति १८:३२; भजन ६६:१८; यर्मि ३३:३; दानिय्येल १०:१३; मत्ती ६:५-१३; ७:७-११; २६:४१; मरकुस ११:२४,२५; लूका ११:५-१३; १८:१-१४; यूहन्ना १४:१३; १५:७; १७:१-२६; प्रेरितों १:१४; रोमि ८:२६, १२:१२; फिलि ४:६; कुलु ४:२; १ थिस्स ५:१७; इब्रा ४:१६; १०:१६-२२; याकूब ५:१३,१६; १ पत ४:७ ।शुभसंदेश और मसीही सिद्धांतो के बारे में सही विचार रखना ज़रूरी तो है, लेकिन यह काफी नहीं है । हमारे संघर्ष में, बिना प्रार्थना के आत्मिक बल नहीं मिलेगा । हमें "आत्मा में" प्रार्थना करना है २:१८; रोमि ८:२६; यहूदा २० । इसका मतलब है यहोवा का आत्मा । अपनी प्रार्थना में हमें उसके प्रति समर्पित होना और उसी की इच्छा में प्रार्थना करनी है । हर हालत में, हर तरह की प्रार्थना हमें करनी है (तुलना करें १ तिमो २:१) चाहे वह मन की हो, मुँह से की जाने वाली हो या लोगों के बीच में ।

"पवित्र लोगों के लिये"- इस युद्ध में सभी विश्वासी आत्मिक दुश्मनों के खिलाफ हैं और एक दूसरे की मदद करनी चाहिए । क्या दूसरों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ मददगार हो सकती है । हाँ । प्रभु ने इसे ठहराया भी है ।

६:१६,२० ***"मेरे लिए भी प्रार्थना करो"***- रोमि १५:३०; २ कुरि १:११; फिलि १:१६; कुलु ४:३; १ थिस्स ५:२५, २ थिस्सु ३:१ । पौलुस एक बड़ा प्रेरित था जो आत्मा से भरा सफल फौजी था ।

"शुभ संदेश के रहस्य"-इसका मतलब है शुभसंदेश परमेश्वर का एक प्रकाशन (रोशनी) है। इसके बिना लोग इसे जान नहीं सकते थे।

"साहस से" - प्रेरित ४:१३, २६,३१; २८:३१ ।

"जकड़ा हुआ राजदूत" - ३:१; २ कुरि ५:२०, ६:२१,२२ ।

६:२१,२२ ***"तुखिकुस"*** - प्रेरित २०:४; कुलु ४:७; २ तिमो ४:१२; तीतुस ३:१२ ।

६:२३ ***"विश्वास के साथ प्रेम"*** -प्रेम सच्चे विश्वास के साथ बहता है (गल ५:६) । प्यार और विश्वास की शुरूआत यीशु और स्वर्गिक पिता से है ।

६:२४ सभी सच्चे विश्वासी मसीह से सच्चा प्यार करते हैं (१ कुरि १६:२२; १ यूहन्ना ४:८) । यूनानी भाषा के शब्द 'सच्चाई' का मतलब है जिसमें भ्रष्टता नहीं है । यह वही शब्द है जिसे १ कुरि. १५:४२,५०,५३,५४ में जी उठे विश्वासियों के लिए इस्तेमाल किया गया है । (१ कुरि १३:१) इसलिए बिना मिलावट का और न मिटनेवाला है ।